या वस्तु-परिचय के लिये संश्वित पाकायन दे दिया गया है, जिमसे विधायियों के प्रयंगादि के समन्त्री में उरायन और मुनिधा हो सके।

उन समान पुरतको एवं पश्-पंत्रहाओं ना भी उन्होन यथारपान घर दिया गया है जिनने कवितायें या लेलाय शिए गय है, जिनने विद्यापियों में स्वनक छप्यपन और पुरतकाशनोधन करने की विज्ञानस्य

जो सेलक विशेष देशियों के प्रत्यक, विश्वापक देशिय प्रतास है तथा शिवार विदी-कार में समाद दे चौर जा प्रतिश्व एव दिशिक शेवक है, विशेष का से उनके ही नृदर, गुरू पण्याण चीर विश्व शिवारों स्रोर साध्यों में के ककत बचने की और विशेष प्राप्त दस्ता गणा है। प्राप्त वाक के साथ पाड-कशाव के रूप में उप-प्रकर्श, पदी एई प्रतिश्वी (सुरदर्श) पर बेशोक्त वहात साला गया है। विशेषि प्रतिश्वी परी में पहार क्यायम में शिवारों में की नहीं है।

mer 🕏 i

व सभी इस प्रस्का में उन्हार ।

उनने द्वतिरिक रिज्ञ्चों के लिये इनने प्रयोध गढ़ के काथ उनने नेवय रणनेवालों उन बाइएं बाजों की कीश में खानश्वक नेवेज दए हैं दिन वर प्रचारा उाल्या उत्पाद है और या विद्यापनी की बाद शान-हाँचे के लिये खानश्वक सीट उपयोगी है।

पुस्तव के ब्रांत में एक्स-वन्ना की विश्व के ब्रावार पर मलेक मितिमिर्फ्तिय मीर कांव की मानना की तथा उसकी माना बार रीती प्राप्ति की मार्चिम त्रकेता भी परिरोध के मन में दे दी गई है। राजी के स्थाप मा देवर ब्रांत में एममें होने हमारिने दिया है। जिससे पित्राप्ति में का प्राप्त गढ़ की ब्रांग में एक वर देता पर हो। प्रयम मा ब्रांग मार्च प्राप्त में राज का अप्याप्त करें, उठकी गणा एवं प्रीप्ती कार्य के स्वय देखे ब्रांग इस अपन्य पूर्व परिचल ही। ब्याने पर हमायी दिवेचना में साम देवा और एक इस होलाओं में स्वयं में हिरीय अपने में साम देवा प्राप्ति मात्र प्रवास हो। साम ब्रांग की प्राप्ति कोंग अपने की विश्व परिचल होरे और उपन्य की हमारे ब्रांग प्राप्ति कोंग भी नमल इसी है। पुस्तक की हमारे-सामी, ब्रावार व्याप्त प्राप्त भी नमल इसी है। पुस्तक की हमारे-सामी, ब्रावार-प्राप्त प्राप्त प्राप्त की हमें पुष्त प्राप्त प्राप्त गणा हमार प्राप्त मार्च ही प्राप्त मार्च परिचल की ब्रावार मार्च हमारे मार्च प्रवास की ब्रावार में है।

रन प्रवार रन पुन्तव की व्यक्तियों द्वार विद्युक्त कराने के जिले म केवन नार्य ने भाग का में साक्ष्य सामृद्ध नेकी या कामार्य का मना राज्य राज्य के वार्य प्रवार प्रवीर के सीत्रक हार्यकों पा पान्यान कारण पावनायान ना मंत्रीनी काल का अ प्रविद्युक्त नामकार कर्या गाई की प्रशादन प्रवार के मान्यव प्रविद्युक्त नामकार कर्या गाई की प्रशादन प्रवास के मान्यव प्रवीर १ जिला हम करा है के प्रशादन करा है जा नाम्य



विषय-सूची

1947		20
१ मात्-भूमि (पद)—मै.पलीटरय रुप	***	₹
२ इरिट्रार श्रीर हुपीचेश ही बाला-ने नेस्वरदक्त	Tr.	
€. €	•••	Ę
१ सिधिया है भाज और त्याहार—संकतित	***	13
४ राजा भीत का सपना—ग्रहा विवयत्तर	•••	₹₹
५ कत्तव्यात्तेत्रमा (पद्य)—मैपिलीशस्ट रुप	***	2,5
६ शेर का शिकार—संदयन बी॰ ६०	*** **	34
ভ স্মাদ—মহানদায়েদ্য দিল		*5
< शिकागो का रविवार—स्टामी स्त्यदेव	***	4.5
९ काती-इसन (पद)—क्रयेष्यादिह उपामाप		ξ,
 सर चन्द्रशेखर वेंक्ट रमन—मगुनाम नागवर्गः 	e E	65
१ हिमालय-इशेन - कत्पार्टिंड शेखावा		==
२ जीवन-संपाम श्रीर होटे प्राची—तब्रहर क	,	
दसर ६०, ६ तः व्ये	•••	9,5
१३ गंगाववरस्य (पट)—जगनामदान 'रन्त्रहर' करे	C.	i e =
Y बाटरट का युद्धराजनेहरू रोङ्कल की	***	225
१५ सच्ची नित्रता—हरिनगत निरु, एमः एः	•••	१२ट
१६ वेदार का दार—स्वतंत्रद		1 4 5
t श्रु तुल्लमी-रचना (परा)		122
(१) सतसई सुमन—'दुल्लं स्वन्दंर हे		1 77
्र भाव बराव - ग० दुलस्य स		12.
- married in section -		

विषय	
> ৭ নহয—কাশির্যদা র	
२० जापान का शिक्ष-प्रमानी-	चद्रयाति गु
२१ नीति-निचय (परा)	**
(१) रहीम-रचनारहीय	***

(२) विशेषक निया-विशिधादास

(३) क्योर-कासी-क्वीरदास

२४ रावण श्रीर श्रीगद (पदा)-केशनदान

२६ श्रारमनिभरता-बागकृष्य भट्ट .

२३ मरवहाँदरचड्र (सादक)—भारतनु बाब् दरिएचंड

२७ वतमान हिदी-साहित्व के गुणु-होप--"मिधरपु"

२२ मिथता-समबद्ध ग्रह

२५ मोध्म--उमारांकर दिवेदी

रम सूर-मुना (परा)-न्यदान

۹E

†=

ŧ٩

٩ø

19

२२

₹\$

२४

ВÀ





विषय-विभाग

Prote (att)

	- 1		1 144071113		118	T IECE	
(a) 3				444			

- (a) Natural Schools—To ex etc.— रोक्स, निकालप राजेट, लोकर मध्य कीर क्रिये कार्यो
- (b) Man an I Hry Activities ets नेर वर्ष ग्रिका, 'राकाले का ग्रिकार मिनेवल के केल कोए लेला?
- (c) Travels-दारदार सीर हार्पेक्स की बाध
- (d) Some Power on Abstract Subjects, etc.— প্ৰন, লাম ক' বিভানমালে, ইয়াং কা লাং, ক্ষমণাল ট বিলামান

H. NAKEARIYA PIECES

(i) Historical Stones, etc.— बाराह्य का इंद

(b) linearaphical :— रह चंद्ररेगा वेंग्ड रहन

(c) Stones of Chivain, etc.— দংখ্য নিম্মা

(d) Imaginative Stories, etc.— भाग भेड का दस्ता

III. LITERARY PIECES

- (a) Short Instructive Articles-
- (b) Witty Pieces, ste .- Wit
- (d) Essays—बाल्म निर्भाता यतमान दियो ना देल्य के गुरा देल, नावहरियमङ (सटक)
- (d) Literary Concient and Diana. -Poetry (22)
- ! Narrative राजवा और सत्तर
 - Puranic Mocies—wiell Eug
 - 8. Description—गणपनरण
 - inspirational-कर्नायोत्तेनना
 - 5. Love of Country-ma 4(a

 - 7 hatten al शिव वसन
 - 5 Devotional 82 FST

साहित्य-प्रदीप

(१) गातुभृमि

()

मी तोदर परिधान हारत पट पर मुन्दर है,

सूर्य-पन्न युग मुक्त, भराना सनावत्र है। नहियाँ शमन्त्रपाट, कृत सारे भटन है, पर्दाजन स्थान्त्र शपन्यनां सिहासन है। स्थान्यानपत्र प्रयाद है बालहारा इस वय का; ह नायुन्या न सन्यात स्थाप्यात सवश की ॥

र नहां निराज किन १४ पुराव्यों के शहरानुसार हुम्पी हिस्स सा न कर कहा, बुद्धिन ए स्टीट मनीया है। भागत्वीम (२) जिसकी रजा में ख़ीट लेट कर वढ़े हुए हैं, पुटनों के कल सरक सरक कर वढ़े हुए हैं। परार्तान-सम शास्य-काल में सक-सूत्य पाप, जिसके कारण "धूलमरे धौरंग कहनाए। इस क्षेत्रे-कृदे हुटैश्वन शिसकी प्यारी गीम में,

दं माध्यूमि ! तुक्को निरस्न सम्म क्यो न हो साद में ॥

(३)
इसें जीवनाधार कल न्दु हो येखी है,

षदले से कुछ नहीं किसी से तू लेती है। क्षेत्र एक से एक विशेष उष्टी के द्वारा, पीपत करती प्रेम-आव से नदा हमारा।

पोपल करती प्रेम-भाव सं लदा हमारा। है सारमूमि। उपने न ने। तुक्तनं कृष्-संकुर कमी, से सहय कहर कर जन सरे जंडरानन से हम सभी

से सहय कहर कर जन मरे जनसमझ में हम संभी !! (४) पाकर तुक्तमे माभी सुनों को हमने भेरता,

वरा प्रत्युवकार कभी बया इससे होगा ? वेरी हो यह देह सुभी से बनी हुई है, कस वेरे ही सुरम-सार से सनी हुई है।

मस सर हा सुरस-सार स सना हुई है। फिर फेव-समय तू ही इसे घवज देख धरनायगो, है मारमुमि ! यह संव में तुक्तमें हो पिज जायगो ॥

(7)

मुर्गभद्य, सुंदर, सुन्दर मुक्त मुक्त घर निरुधे हैं.
भारित मीत के सरस सुपोरम एवं निरुधे हैं।
धेर्गपियों हैं प्राप्त एक से एक निराहों,
राहें रोभित कहाँ पातु वर रखोंवाहों।
डा बाबरयक होते हमें निरुधे सभी पदार्थ हैं,
हैं मार्स्मृति ' बसुषा, परा तेरे साम पदार्थ हैं।

(()

होता रही है कहीं दूर तक रैल नैयो, कहीं पतावति बती हुई है तेवी बेटी । नतियों पैर पतार रहा हैं बत कर बेवी, पुरुषों से तर-पांजि कर रहीं पूजा तेवी। मुद्द मत्त्व-बादु मानी तुम्मे बंदन बार बढ़ा रही, हे मार्टमूनि ! किसका हाद सालिकमाव बढ़ा रही।।

(2)

कतामयो, सू दवामयो है, चेनमयो है। सुवामयो, बात्यस्थमयो, तू प्रेममयो है। विभवगातिमों, विश्वयातिमों, दुस इस्ती है, भयमिवासियों, गोतिकासियों, सुसक्यों है। हे शस्त्रसायिमों होते १ तू करती सबका आप है, हे मार्स्स्ताम ! सेवान हम, सू स्वती, तू शय है।

मानुभूमि (5)

v

(स्ववेशसगीत से)

जिस पृथ्वी में मिले हमारे पूर्व ह प्यारे. धमसे है भगवान ! कभी इम रहें न न्यारे !

लाट लोट कर वहीं इदय की शांत करेंगे.

सममें मिलते समय मृत्यु से नहीं हरेंगे। इस मार्म्स का धून में जब पूरे कन आर्पने, होकर भव-वंबन-मुक्त हम बारमहत्व बन जाउँगै ॥

पाठ-सरायक

-मिथलीशस्य गुन

परिधान-वस्त, मेश्रजा -काटन्द्व, परमहस्त-पर प्रकार के मन्यानी, अदरातल- जडर-वेड + चनण-प्राप्त- उदर की छाप्त जिससे भीजन पचना है.--वेली -- बनल का ती बाथ है ब्रान्त, नख का-धक राजा, पानी का नल, कीर कानल का ग्रमं है बाय.

प्रस्मुपकार-मात-उपलग + उपकार-उपकार के बढले उपकार-प्रति उपसम से अन्य शब्द बनाओं बथा-प्रनेष, प्रतिस्पर्ध श्रादि: वस्पा-वम-(श्रष्ट वनु) श्यति, धन + धा-धारण करते-बाली-इसी प्रकार थ लगाकर बनाओ श्रास्य शुरुद जैसे श्रापुथ, बारसहय-नाव-लड्डा-तत्त्ववंधी प्रम, बाबर्-बाहाश. वस्त ।

क्रियास र-मानुस्मि के नाथ इसारा क्या नवंध है, क्यों वह इसारी माता है ?

- २--इमारा उनके प्रति क्या कर्तव्य है ! यहाँ कर्त कानी क्या इक्द्रा प्रकट करता है !
- ४-- मानुभू म का वैसा रूप यहाँ प्रयम धाँद में विशिष्ठ हिया समा है !
- ५-- स॰ २० १ कीर १ का सामय माबार्य तिली।
- ६—परिष, बनाय की प्रदेश करी—

्रमुख, गेलमा, रोप, जूल, देम ।

- ७—॥ वर १ की १ वाः कुन बार उनके कर बान पुका सामान्य भावाय, ४१ पूर्ण कुत में लिखी।
- म—र्म कारता सं कटाम करें कीर इति प्रकार की मातृभूमि का भारत देन पर कोई कृतरी करिया सुनाझी।
- ६-- भा प्रता है में दहार निहें-

चन- सन्तः । वातम-शिवुषः, वेद-दाः, व्यन-सु सन,

१०—प्रथम च उन्हर्भ तयक विकार स्वयं स्वापी— सर्वे सर्वे साल क्षत्र स्थ

%---

भिक्त । १८८४ है ५५% होना नया **इती प्रकार द्वारा** १८६५ हुन । १९५४

र ला**क्षा द्वा**ल **६**९६ सा, स्वया सुवाह

(२) हरिदार और दृपीकेश की यात्रा

साजकल सर्वेज नीरम निदाय का प्रवाय-ताव खाया है, सारा मूक्त भगवाल भारकर की ज्वासा सी अरीविमासा से स्रा वह के समाम जल दहा है। प्रथम प्रवन वह-संवाहि की भूकता रहा है। यर से बाहर जाना हुक्ता हहा करना है। पर्हे स्वाह में भी बैठे होज रहे हैं, एको बंचु रोग्हे नीहीं या दह-कीटरों में विदे बैठे प्राध-एक एक रहे हैं।

किसना हो पानी पोजिए, स्था शान्त हो नहीं होती।

कारे सतीर में प्रशेष-प्रवाह है। ऐसे भावप-काल में शुक्र भागनत है ता शावज भागवास में या विभाजा, पंतरी आहि पर्वती के प्राप्त आहन के तिसास में शंभात होगा पर्दी भागव से शानित ताल करते हुए प्रश्न-वास्-परिवर्टन का भी शाम प्रशंत हैं।

कुछ शीमार 'एक परंच दो काल' के सार को विचा कर मेनूरी चीर नेनीदाल व जाकर इरिग्रार चार्च चीर लीकिक पार गैक्किक दोनों चानव्य प्राप्त करते हैं। जिल सज्जी है एक बार मो इस परामान्द्रायक तीचराज में चाने क सीमाग्य पाप्त किया है वे, इस पूरा विश्वसा है, यह कहने में कदापि सक्ताय ने करते कि यह खान चूपने गुड़ो- स्वास्थ्य-पद्धन श्रीर श्राष्ट्राव्यक्त्व—में भपनी समता नहीं रखता है। इस स्वान की मनेग्गोहिनी शिष्ठ वर्षन के बाहर है।

इस १२ जून की लखनऊ से पंजाब सेज के द्वारा पर्छे। सार्गे में एक हो विशेष घटना घटा, भवध-रुहेलागेट रेज पर इरिद्वार के संसीप लुकसर नामक एक स्टेशन है। इस सम देष्टरा-इलाष्ट्राचादवाली जाड़ी में निरिच्स पैठ वार्वालाप कर रहे घे कि एक यायृ साहय अपने याल-वच्चों के साघ उसी हिन्ये में चा विराजे। गाटा तेज़ होकर कुछ ही घागे गई द्दीगां कि बायू साइय के छोटं बच्चे ने बनका मनीयेग, जिसके झन्दर लगभग ७७०) के नाट झीर कुछ रुपये-पैस थे, गाड़ी से बाहर गिरा दिया। बाबू साहबं धरे ! बैग ! कह कर उछल पहे. गाद से बच्चा गिर गया। इमारं एक मित्र ने तुरंत गाहो छाई। करने की जंज़ोर खींची, गाड़ी खड़ी की गई। इस स्नोग उत्तरे ना देखते क्या हैं कि एक ब्यादमी, चलती हुई गाड़ो से कूद, वेग घठा येग से भागा जा रहा ई। हम लीग पीछे दीहे धीर लगमग श्राधे मील पर उसे पकड़ सके। वंग मिल गया धीर मामला ज्यो-त्यो ठंढा हुआ। गाडो फिर चल दी धीर हम लोग सकुराल प्राचःकाल चा० १३ को 'हरिक्वार जा पहेंचे ।

गत यर्ष की ध्रपेचा इस माल इरिद्वार में यहुत कम मेला हुआ। भयंकर दुर्भिच श्रीर उससे उत्पन्न घोग दु:ख दा इस न्युनता के कारण धा सकते हैं। यहाँ पर श्रनेक दंव-मंदिर द हरिद्वार भीर इस्पोक्ष की याका भीर पमहालाण है, इसमा क्रियो बाती का सहने में दु.स् हरिने की संभावना नहीं है। हम पहरुख हरव भीर गींग स्ट का बचन आगे करेंगे। यहां मायादेखा न्या महामनी, वि स्टेस्ट सहादेख, सूर्योईख भीर कनस्यल से वृक्त प्रमापित संविद क्रांनिय है।



हाया. हो। बाव हार हरियार कीर स्वानागर स्ट्राम के सन्ध में

कारिकुल कार्याचाध्य को स्थापण को एउँथी, दश्य की हुए स्र का का कर तीवल " हम शताध रायायु क लिए स्वास्त स्र वण्या करने ह साम्युनात थे न्यून । चार स्वाध्यापलाय स्व का गो को साथ वर्ष का यान्य रस्था हनका मुक्ते हैं। स्वार्थ के ताय क वण्या हम साथ हम । यान्या ने हा एक्सो की ताय क वण्या हम साथ हथा । यान्या ने हा प्रकार से पोपधीय है। हमें भाशा है कि प्रत्येक हिंदू कुछ न कुछ देकर इस पविद्र ऋषिकुत की सहाज्वा करेगा। इस स्थासम के भिक्तारियों से हमाग निवेदन हैं कि वे बैमास्य को हटाकर इसका प्रवंब एक मुशिचिव वया सुपोग्य सभा को टे टें धीर यों इसे पिरस्यायों वया उपयोगों बना हैं।

१५ जून को प्रातःकाल हमारो हपोकेश के सिथे वैयारी हुई। येतागड़ों के सिवा वहीं तक बार कोई भी सवारी नहीं जाती। मार्ग में दो-एक स्थानों में पहाड़ पर चढ़ना-कतरना पड़ता है। यहाँ के होना को मी का 'मील' के है इमने सीचा या कि प्रवत्ने हिमाद से केवल ५ ही कोस चलना होगा, परंतु उनके स्थान में हमें १० कीस का मार्ग नापना पड़ा १ सासे के प्रयत्ने हिमाद से केवल ५ ही कोस चलना होगा, परंतु उनके स्थान में हमें १० कीस का मार्ग नापना पड़ा १ सासे के प्रयत्ने होने के कारट येनगाड़ा को बहुत हिसमा सीर 'सड़-गड़ाना' पड़ता है। हवाकेग-या' में गाड़ों के घोटेसिस होने के कारट येरकप से उदर-प्रयत्न हो जाता है। कीटने समय एक धीर स्थान नेठ जी का साथ हथा।

जार समय प्रायो के कपर चढ़कर गाड़ा खट से मीके गिरवी यो, देवारे मेठ जी सदमने में हा जाते में , रास्ते में साफो दूर पर मानावायम् ची का मिठा बहुवा है। इसो मेरा में भरत ची हे होने मीड गालनात का यहाताच्या मुख्य है। बही पर बाहा कामी कदलात जा का प्रमालन में वर्ष हा कहा मान विन्हा है। इसक बहुवारी हुए। दी राज्य है

- कृष्टिवार सीरर क्ष्मांच्या की माना

в

पण पर्नु पण नाम वाल बुलाकन से क्षान पर्ने हैं

प्राप्त पर्ने नार सैंप बदान देने हो हो काम क्षान पर्ने

प्राप्त पर्ने वार्त से एवं होने वार जाता पर्ने प्रमुक्ति हैं

पर्ने के ने उन्ते के निवास क्षित्र क्षित्र मुद्दित हों है

पर्ने के ने उन्ते पर्ने विश्व क्षित्र क्षित्र में

पर्ने के निवास क्षान सेंग्रेस क्षान क्षान

escal force and support province and part of the control of the co

.

पर शैवन में भरी हुई कीमणांगी परंतु प्रवत्न थीर नुंदरी, परंतु विशात मूर्विमती संगा देख पहती है।

सपनो रमसावता सीम सरमता से तट-वासियों को निरंबर सेवित करना इसका मंत्र हैं , इसके अपर इयोकेश और सक्तम्यकृता से आप र्वता-वार्त्वका को भूतते हुए-ता पाइएगा। वहाँ यह हुवीलों लड़कों के सहग कहों हैं सबी, कहीं खेलवी, कहीं विद्वावी सीव कहीं पर गाती हुई दिष्टगावर होती है। उस स्थान पर इस विशाल वेलितनी यालिका का रूप अद्भुत ही है। वहाँ पर इसे वपने सिव पर्वत सीर वन की गोद में निया स्थने प्रदर्शन प्रदेशकर देसनेवाले के विद्या से स्थान पर दी हुने तुए देसकर देसनेवाले के विद्या में स्थान थाने होता है।

त्रक्तस्भूता के समीव वन- भीर वार्वत्य स्ट्रंग तो तंता जो को भीर स्वरं भागीरणी भी उनकी शामा व्हावी हैं। यहाँ पर गंगा का भट्टीयत कप, अमितहब तेल और पहली हुई पीवनावस्था का वल दिस्साई देता हैं। दिन्हें गंगा जो भी स्वाभाविक मधुरता, शालता भीर नुम्बादुता का आनंद क्याना हो। उनहीं उक्त स्थान क्षेत्रक नाहीं। उसमी सेदेह नहीं कि यही वे भागारथा के अनुपन सींदर्य, अलीकिक प्रकार, मनुतनीय लावण्य, अशीवत कप, अपरिमेष तेल भीर सक्यानीय प्रभाव से अवस्थ मेरिहत होकर यहाँ के आनंद मीर सुत्व को सदा स्वरंग माहित होकर यहाँ के आनंद मीर सुत्व को सदा स्वरंग रहीं

इरिद्वार चौर हपोडेश की यात्रा

पाट-सहायः-चार्ण्यादित--दके हुए, लिदिए-- निर्दिश्वत, सतीमालिन्य--

(यनस् + मालिन्स्) मन को मलोनता, ।चरम्यायो—दीच कालं तर्रे इस्तेत्राला, च्यान्दीलिन—हिलतो हुद काटिया—यहे वहे धामी, चन्नतिहरू—चरीक क्लोजनीय व्याननीय।

च्छायात १—इम यात्रा का पांचांगीत करने त्यर से लिली।

१२

र-गन्ना भी का कही कैमा क्य चिन्स ल्ह्या है ह

१——भाषाण १९९०कः वावचा में अयोग कर- वाग मापना, इन होना, स्वस्त हुना दौ नगाना, पा उत्तर होना, देश से काम किसा तथ भीन लेगा।

होता, रह भाग लगा । ४---चिन महोच चर्च में महुत कुए हैं, इन्हें (अंद्रा भिन्न द्यंथी में महुत करा ---

बीला करना बाल, टंबी, सहारता, टंब ! ५.—व्हिश दकार के शब्द है श्रीर वैमे बने हैं—पेने ही सीर सब्द बना कर थया क कशं---पदारीने वस्स, पार्वस्य रत्नीली

कोषणीयः। ६--- इतं राटे स्त्र आहेदाने तन्द्र यूना आहं इन्हीं कंशम मध्यन्त्र शब्द बनाया नेपा यमुगः का

 मंबस यसुन्धित को अवन नुसाबार उनका यह आस्था कर इनकी निर्मिक तथ चार सवाबा कर त्या में परिवर्शन करा।
 मन्तिक नुसाब कर विवर्शन करा।

क्षा-वर्गायाः समान अन्यः-सर्वारात्रः समीर्थात्मः सनेशानेतः, स्थारीपीतः, रेघारपादी । १-जीनानं समी वता है, वहाँ है साथ क्यो प्रांतः है ।

संकेत---इटिंग बाने का मार्ग दिशाना शास बचा को घास का निर्देश

क्षा वराना इ.स. वराना

(३) सिधिया के भाज और त्योहार

भारतदर्भ में दौरता के नाते मिल्य, राजपुत भीर मरहता कानि के माम कति प्रसिद्ध हैं। इन मीनी भी। विशेषक्ष मे मग्हरों ने समन्मानों में बनेक बार गमावकारी युद्ध किए भीर भीत में देनकी नेवारित रांदेर-भी की समृत तम हो कर दिया। स्तर्भदर मिस्रो धीर भरहती की धीर्गत्तों से मा यद करने के भंदनर प्राप्त हुए भैरि जिस बीरहा का परिचय उन्हेंरि दिया इसकी भूरि भूरि प्रांमी स्वर्श निर्माच गुप्य थाहक विदेशियों में की है। यहाँ उन्हों भगहरों के सामाजिक जीवन, मीत. स्रोहीर एवं मिष्टादारादि की माधारध विवट किया जाता है। होलतरांव सिधिया भारतवर्ध के इतिराम में एक प्रसिद्ध क्वेंक्टि हो एके हैं, धेरी: बेरोके विषय में, प्रस्तुत प्रमीग में, विशेष लियते की काई धावर्यकरी नहीं । उन्होंने ग्रेगरेलों में ग्रेड किए भीर परम्पर मंदि है। जीने पर एक सेंगरेसी रेलाँट उनके माप रहने नगा, जिसके साथ की धैगरेला मैनी का कायक हैं: सं १६०६ से क्योंने शहेंने ही। इसने सिंपिया महाराज के साथ रहते हुए धनने आई की जो रैनलेंड में घा, ३२ पत्र लिखे थे। पहेलां पंत्र २६ विसंदर सन रेदांद की भीर मेतिन २७ फ्रवरी सब रूदांश की लिला था। इसके दशों से मरहर्ज के धन्य क्यबाबा दिशा-

िर्मिषिया है भेरत चौर स्पैदार नादि की बालां के साथ ही सरहतें के साल-श्योहार हैं गिष्टाचार काति का भी पर्यात परिचय प्राप्त है। स

रेश्रार्टर लाइव की शरफ में महाराज के शाब एक मेर न्ययंत्रा दुन रहता या जा गुवरदार कहनाता था। ऐसे हैं महाराजकी कार संभा एक स्वरदार रेपाइँट के यहाँ ह

14

रहा करता था।

न्यमय समय पर राजेर्डेट साहब विधिया महाराज से मि करत थ । जनवरी सम १८०५ का दिल है कि रेहारेंड मार महाराज में शावनी में भूजाबान बरने बाए। महाराज की व प्रसम्बद्धाः वर्णकी का चणक लक्षाः, भी क्षुम् धार्म संशास्त्राचा चा तथा का । वा वह बेट वह वा । उनका पीठें

लगा कातन राजान जा नाकार श्रम्भीत शाकाल संदर्भी A CIBOCK & MICH STOP STORE BY RETTORE

The total and the and the state of

The state of the property of the section of the sec er gran to arrest agent the CT carres carrera en un acres en al राफ से रेड्रॉटेंट के यहा रहते थे, पैठे । चलते सम - इतर धीर रान दिए गर् फ्रीर गापालराव,जा पहले रेट्राईट साहय केरवागत है चिये द्वार पर प्याए ये, इन्हें बहा बापस पहुँचाकर खोट भाए। जब महाराज किसी से मिलने जादा करते ता ध्यपनी मस-नद (गटा) यहां पहले हा से भेज दिया करते ये धीर यहाँ पर प्राय: सप बार्हे वैसी ही हातां जैसे धवन दर्धार में हुया। करती घों। ही, पान व इतर देने का काम उस निश्वक का दीवा या। विशेष भवनसी पर सिङ्झ्यत दा बार्तायाः एक पार रंड़ार्टेट साहद का महाराज की धार से एक प्रावि-भाज दिया गया । सार्वकाच का समय बा, ढेरी में मेवां-मिष्टाक्षां व प्रशासी मादि का भन्द्रा ठार-पार लगाया गया था। महाराज की नरफ़ से एक घेली, जिसमें एक हज़ार रूपए थे, भेंट की गई भीर रंज़ाहेंट माहब ने इस सरदार की, जो बैली लाया था, दिलक्षत दा। फिर रेज़ार्टेट ने गवर्नर-दनरल की क्रोर से चार सुंदर सरवां थे। वृां के सहित एक सुंदर बण्या, जिसमें सीने का काम हो रहा घा महारात्र को मेंट की। महाराज की छोर से सब स्पोत्तार प्रधाविष मनाए जाते ये मंत्रांति के धवसर पर महाराज ने मुख्य मुख्य सरहारी वया रेज़ार्ट की विज भेंट किए। उसी अवसर पर छादनी की एक प्रवास्य वैश्व ने बहुत-में आक्रमां की भीजन का निर्मेश्रम दिया भीर रतन-पान का प्रशंसनीय प्रयंथ किया। जिसाने की परचात् प्रत्येक की एक घोती, कंदल और हुई की सदरी मेंड १६ सिविया के ओज भीर त्योहर की। मन्तर्नर बनेममहोसम्ब पर परश्रर हुव्य में दे किय, बसेनी नेन की वर्गाहृषी जे बनाय गय। क्रावनी स्वाम पर मान-मान हुआ।

मुस्तकानी से मेहर्रक कं सबसर पर नहाराज है। से रश्तर से समय पर बम पहले थीर वे सामगी से । सो, जिससी सेकश को से धायक था, रेसमें भी गये। सामें के पूर्व शांत का यह गाजिए मुद्दान के गांव से नमू से सामन बाग गय भीर महाराजी में भी थियें होकर कि रुमा पहचाज़ा आहे की देखा; बाहन साहरें हिंदुमाना वागान बहुन कर रजायेंद की सुमझाना

हिंदुणाना पोताल १६० कर रहार्यत से तुमझान सनार हुए गाहित से स्व ताब दार्था पर पहुंचर से नाम कार त्या न त्यान कर गर्नेन का पर्यो है से दुश्वी से क्षान्त्रक रहार्योक्त स्व नृत्यार रजान्त्र सिविका सहाराज करणाक स्व त्यार रजान्त्र

मुख्याबरान में 88 वर गुरू व कर अवशा जर राग राग वा वा स्था सुष्ट स्थाद में १० गुरू कर गार का गाए आहाराज से इसस्या का आवश्य करात्र कर में अब देखते से हैं है अपूर्व स्थाप हैता रहक सर्वेत्व हों जा का शे (से हुई हो देखें सही स्थाप कुरू गुरूवा जातारानी रोग से सीवह से साहत हैं। हुए में कर नर्न, करने से तुर्व से स्थितिक संस्कृत से साहत हैं। सामी कर नर्न, करने से तुर्व से स्थितिक संस्कृत सुर्व हैं। ये दि गानवात एक ही पालन स पांच-पांच सी स्पर्न एका बर त जात थे। सन्माहमी स महासम्ब क तिये विशेषरूप से एक विस्तीरी

संपृताना गया और पूल-दाल भवन आर्थ बनाय गए। इस सम स एक सारस्यक वस्तु तावन्त्रे क साथा स मीत सी आर्ची और बस्सय का समाप्त पा निर पैरेपा को पेप दी असी मैं। इस प्रयक्त पर आक्राण का एक बहुस रुपया दान दिया गया। सायकाल का समुग्रा स आप हुए अवीद्य संस्थातियाँ का

इ.ज.भारा म भनाइर रास हुन्या। मधुरा में वस समय ये तीय बहुत थं कर बहाँ स दूर दूर कांभनय-भर्दरांनार काया बरते थे। दशहर क त्योहार पर दक्ष (इन पून ही चीड़ों को स्तान,

माल्या जाद क द्वारा देवत और असन्यक्षां को सात किया गया। मादाकाल कवायद दूर। महाधान क्रायेय दीन को प्रधारे। दनक पहते हाथया पर भंदी निकाल गए। स्मदार और अक्सर

कारि जुएस क साम म । पॉटलां न पक हुए की दहती की— मा एक स्थल पर समाह गढ़ मी—दूम, पावल कारि से पृष्ट की। दहनेंदर महाराज न दसने से एक मान करनी दहतार से

होड़ और ठाइटे ही बह बीसरेठ होड़ तर गए. विन्हें इन्हें हुए इस बाल का बडता हथा बेंडूडों का चलना अपन्म हुआ और सब लीत एक रेटा की और हीड़े और वहीं से बातें से कार। सतानी के अपनाक महाबाद सबे हुए हाथी पर सवार ही अपने निवास-स्थान की पक्षारें। मांग में स्थान स्थान रणमा, कोई नदी या तालाव नहाने से न छोड़ा बादमी नदी है जिसकी निगाह में में पवित्र पुण्यासा म

सन्य योता, ठीफ, यर भोज । यह ता बनवा कि हैं की दिगाद से बना है। इसा से बिना पूर दिन्यताई देने हैं? यर स्टम की किरस यहने ही सैसे सम्मत्त नगा जान हैं। वचा सदाई के हमारे दुर तैंहीं सिसी सा सीई साजून पहने हैं पर प्रच लुईदीर्ज बगायर बंधा ना दस एक हैं। से हमारें जीव . है। बना ना मू कर बात था आतने से, किसे प्रवाद चाहिन, हनना नहीं ना चा संस्ताव था, से तेरी प्रसिव चाहिन, हनना नहीं ना चा संस्ताव था, से तेरी प्रसिव

निराण वार्य यह कहान राजा को शिवर के पन की दरकार वह जड़ा में गया थि आही से सारा बता का बीर फिर वह उनका वा कहने भागा कि मीते कती का वार-कर्मा वी कुछ भी क्यों तही बराना करने की रिटा नियान करका रुखना है। वह वह कि पूर पुष्प-को बीस्कीरनो थिए हैं दिनसे काराज्य सेपूल हैता।

राजा वह मुक्तार कायान्य प्राप्त कथा। यह गां सम की बाव जो । हुक्त वर्ष स गांव से शब्द के शब्द किया का । मा क्वित किया की स्टिप्स का कि दाय वा जिल्ला

t- millionly distributed and

चारे न किया हा पर पुण्य मैंने इतना किया है कि भारी से भारी पाप भी उसके पासेंग में न टहरेगा।

राजा को वहाँ उम मनय मपने में नीन पेड़ वह कैंचे कैंचे कपनी कोंकों के मानने दिन्याई दिए। करा में नदं हुए कि मारे बेक्स के उनको टहनिया धरनो तक मुक गई थां। राजा उन्हें देखने ही दश हो यथा और योजा कि मत्य! यह ईश्वर की भीन कींग जीवों को दश क्योंन देश्वर कींश मनुष्य दोनों की प्रांति के पेड़ हैं, देखा कवीं के योक्स से धरती पर नए जाते हैं। ये सीनो मेरे ही सुगाए हैं।

पहले में ता वे नय लाल लाल कर मेरे दान में लगे हैं भीर दूमरे में वे पोले पोले मेरे न्याय मे भीर तीमरे में ये मय कल मेरे तप का प्रभाव दिखलाते हैं। मानी तस समय चारों भीर से यह प्यनि राजा के कान में उली बाती थीं कि प्रमय ही महाराज ' पत्य ही बात हम-मा पुण्यातमा दूमरा कोई नहीं सालात यमें के बवतार हो। इस लोक में भी तुमने बहा पद पाया ने बी जम लाक में भी तुमने बहा पद पाया ने बी जम लाक में भी तुमने बहा पद पाया ने बी जम लाक में भी तुमने बहा पद पाया ने बी जम हम के भी तुमने बहा पद पाया ने बी जम लाक से भी तुमने के से लिंदाप में सिता हम मन्दर भीर इस्का जान कर पर प्रमान ने पर पर के की मा नहीं लगात

मत्य दोता कि भोष भी इन पेटो के कम में कार का गरिन्ह तु ईश्वर का भक्ति भीर जीवीं का उठा के व्यवस्थ के अन्य वा उनमें फल-कून कुछ भी सही का का जिल्लाक व्यवस्थ वह लाख्न

राजा भेरत का संपत्त वानी कीर अफीद फल कहाँ से का गए। ये अब-मुक इन पैड़ों

में फल लगे हैं, या तके फमजाने और खदाकरने की किर्मा में पनकी दहतियों से लडका दिए हैं। चन इस पेड़ी के पान

212

चल कर देते तो सड़ी।

सेरी सगक में तो ये जान साज कव, जिन्हें नू धरने दान की प्रभाव में लेंगे बतजाता है, यश बीट कीरि फैलाने की बाल कार्योग प्रशंका यात्रे की इच्छा में इस चेह में लगाए हैं। नियान न्यो शी लश्य ने उस येड की खुने की शाध बढ़ाया, राजा सवने में बया देखना है कि वे मार कव जैसे साममान से सारे शिरते हैं एक बाल की बाल से धरती पर गिर पड़ें। धरती सारी नाल लागर्द । देहों पर सिवाय पत्तों की धीर कहा न रहा । मरप से कहा, राजा ! त्रीने कोई किसी यात्र की साम में विपक्ताता है जमी शरह सने धारने शुवाने की प्रशंसा पाने कौ बच्छा में ये फलाइम येड पर लगालिए थे। सस्य के तेल से बहु मेरा गन्त गया, पेड़ हैंठ का हुँह

लाते सीर समस्यां से प्रशंसा पाने के निये कायन देश्वर की भन्ति थी। जावाकी दयास नाकुछ बानहा दिया। वरि कुल दिया हा या किया हा ना न हा क्यां बला बसलासा । सूर्व !! sen कमहासापर नुफूता अवाल्बर भाजाल का नेपार हथा धीं। भावन एक ट्टा साथ ना उसने ना सारा का मुना समर्क शापर क्रद्र भनम कार्यक नेता अधातकता, भूत्य ते इस देर

रष्ट तथा. के कुछ तुने दिया और किया सब द्विया की दिखे

से भग्न कथा था। साथ का भाग बाग योग गरें पा हो इसका भी दर्भ राज है। यहां भी एर्ट कर एका मा। बाद बाका कि भारत । येन रं २ ५ ५ में संदेश क्षारी की स्थापे शिक्ष करने की दबका से असा जिल् है। बरनेदाने में होब कहा है कि मन्द्र मनुद्र में कामी से इसक गा का भागना का विकार कारता है कीत क्रिया अगुन्ध की यह की आवारता की कालुलाह क्रमबं कर्रतें का दिलाद लेला है। स कामडो सरक्ष भागता है कि यहा स्थाय सेरे साइप की

कह है। जी न्याय न करे की लिए यह राध्य मेरे हाथ से वर्धी कर रष्ट्र रहें । किस राज्य से स्थाप सही वह से खेलाय छा घर है गुड़िया की बांबा की बरद दिलावा है, काब विदा कार

गिरा। सुर्वेश हो वयां सहीं बतवाता मि यह नेरा स्थाप न्यार्थ मिह करने और सामातिक सुर्य पाने की श्रष्टा से है पापका ईश्वर की अस्ट ब्लीट जीवी की दवा से। भाग की पेराकी पर पर्राता है। बाया होते तीयो बर सीं हजाब हुत म बन पड़ा । हीस्से येह की पारी धार्ट । महत्त का शाम लगते ही वसकी भी बड़ी हानत हुई। राजा करदेत नजित एका। सत्य में कहा कि सूर्य । यह मेरे सप के फूक करामि नहां इनकी तो इस पेट घर मेरे छाईक र से समा रक्षण भा यह बीत-मा प्रत थ नार्घ-दाता है जा नुवे निरहेकार क्या हें) बंद का भारत की वालाग्राप्त का कारता है। सूल यह त्य २६ राजा भोज का सपना इसी पाग्ने किया कि जिसमें अपने तहें आोरों से अण्डा और स्टक्ते दिवारें। ऐसे हो तत्त्व पर गावरगनेछ ! तू हर्गों पिन्नें को उन्मेर रमवा है पर यह वा बतना कि सीदेर की उन हैंसें पर वे जानवर-में क्या दिखलाई देवे हैं। कैसे सुंदर और आंर

माजूम होते हैं, पर ता उनके पक्षे के हैं भीर गर्दन फोरीते की, दम में सारे किस्स के जवाहिर जह दिए हैं।

राजा के जो में यमंद्र की चिडिया ने फिर कुरकुर्त हो, मानों सुकते दुण दिये की वरह जगमगा 'डठा। अब्दी से जहारे दिया कि सत्य यह जो ड्रक यू मंदिर की मुँदेशें पर देशवा है मेरे संच्या-मंदन का प्रभाव है। मैंने जो राखों जाग जाग कर कोर साचा रावहें रावहें इस मन्दिर की देशनी की पिया कर देशवर को रहति-मंदना सीर विनवी-आयेंगा को है यहों मा

विद्वियों को तरह पंक फैजा कर साकाय को जाती हैं सती देश्वर केसामने पहुँच कर धाम मुक्ते स्वर्ध का राजा बनावी हैं। सरम ने कहा कि राजा। दोनक्ष्र करवासागर सीजाताक्ष जगदीयर क्रमने मण्डों की विनागी सदा मुनाबा रहण हैं और में समुख्य सुद्ध हुए दो बोर निष्क्रपट हाकर नम्मणा और कहाँ। साथ अपन द्रक्तमंदी का प्रशासनाय आपवा उनक सना हो। का दुक सो नावर न हरना ए वह उनका निवदन उना पन सी

का दुक्त भी निवर्षक स्थान जबत जबका निवर्तक क्षा दुक्त भी निवर्षक पार हा जाना है फिर स्था कारण कि म साम कार्य तक स्थान हो जाना है फिर स्था कारण कि म साम कार्य तक स्थान के किस हो प्रदेश कि भी जिल्ला जा राहा हम जाना के अभ जान पर भाकरण का अह जात या इसी तमह पर परकट कहतमें की तनते पहल्याया करते हैं।

भाड वस लेकिन सत्य का साथ न छेड़ा। तब हैंदेर पर पहुँचा तो क्या देखता हैं कि वे सार जातवर, जा कर से ऐसे दिसानाई देते थे, सरे दूध पड़े हैं, यह तुचे-मुचे भीत पर तेरे दिय-कृत सड़े दूध, पढ़ी तक कि सारे पदतृ के राजा का सिर किया दूधा दो एकसे, जिससे हुछ दम याका था, र उड़ने कारशदा भी किया तो उनका पंच पारे की तरह आरी हो यथा भीत उन्हें उती दीर द्या रस्त्या सहका इसर किए पर उड़ने हस भी न दिया। सत्य याना, भाड । यम जहीं तेरे पुण्य कमें हैं, इन्हों

मत्य याना, भाव ' यम वही तेरं पुण्य कमें हैं, इन्हों' महित-यता भीर विनती-आर्थना भे भरेरते पर मुख्यों में बारा चाहता है ! मृरत वा इनको बहुत भन्दते हैं पर बान पिन्नकुष नहीं, तृते जो कुछ किया कैवल लीती को दिख्याने का, जो में कुछ भी नहीं। जो तृते पक बार भी जो से इकारा हीता कि हीत्येष्ठ होनानाथ दीनहितकारी! हुम्भ पायी, महाभ्यप्राधी, इंडर्ने हुए को यथा भीर हुन्या-हिट कर, तो बहु तेरी पुकार तीर की तरह तारों से पार पहुँचो होती। राजा ने तिर नीचा कर निया उत्तर कुछ न यन भाषा।

पाड-महायक

स्वत्यप्रा--रमा व देन में क्या प्राप्त के मर्ग देव हरने हर। प्रार्थ प्राप्त के को पात्र हरने हैं के कर भर देवा पर के किया के को को की है हर को प्राप्त के प्राप्त के किया है की प्राप्त की कुछ है।

राजा भोत्र का सपना 10 श्रनीगृत्त- (प्रमान्त) अन-नहीं, यिनती-रिनती, गोस

गनेश-प्रश

श्राभ्यास इस पाउ की भाषा में क्या विशेषता तुम्हें जात होती है ? २--यतमान लड़ी रोली और इस भाषा में क्या शतर है, आई है

शान पटना है वहाँ परिवर्तन करे। र--- वहानों की भाषा चेनी देशनी चाहिए, इस बदानी में बह में

नक गाँरत दाना है ह Y- इस्टे चार शिम नव से लिया जाता है.

भाज प्रश लेकिन नाय का नाथ न छै।इ। ! उनका वत्त , दा गया थ्यीर उन्हें उसी डीर इस स्वर्मी

नदमा १०० किए पर उद्वे जरा भी न दिया। राणा ने जी में धमेड., अग्रमधा उठा ।

 इसी प्रकार के स्थान वाक्य मुने। स्थीर उनमें संयोखित वर्षिया करें।

 प-रन बहानी में बचा उपनेश मिलता है, उस पर तुम्हारा की 1यन्तर है P

६ — । जा का पेड़ कीर यही क्या तूलरे कवी लें दीखने थे रै अ-इम पात के उद् शार्दा के श्मान पर दिल्दी के उपयुक्त शारद रहते च चनमे वाक्या में अपून्त का साराध लिला—

कडी नान नेता, ने नाव का पर है, जान की आन, वर्ण म न उद्दरता, श्राप्ति लेक्ना ।

९-- पेमे शस्द है, इनके परायशाची शस्द लिमी-तरं, रास्त्री घरता, जिरे, सामे, हुव, परवरे । १०--- वन अभी में अयुक्त हुए हैं, शिक्ष शिक्ष सभी में प्रयुक्त की

सप भाग हर पद स्थान दस सनी देश' प्रवार क' - ६ वड'- ' दुस दी मा बहर वास्पती' वृत्रि

* # ...

(५) कर्तव्योचेजना

दुस्त है, दुस्तर्थ वरे , उद्यो।

पुरुष क्या पुरुषार्थ हुद्या न डी.

हदय की सद दुर्बहता ततो। प्रदय के। हमसे प्रश्यार्थ हो—

सुदम कीन दुम्हें न पदार्थ हा ?

प्रगति के पर में विचरों, उठों;

पुरुष हो, पुरुषार्थ करी, उद्देशसा

स प्रधार्य दिना कुछ स्वायं है. न प्रसार्थ दिना प्रसार्थ है।

समभ ला यह बाद यदार्घ है—

कि पुरवार्य वही पुरवार्य है।

सुबन में सुग-हारि भगे, वही:

पुरुष हो, ध्रत्यार्थ करो_। यहा ॥२॥ न पुरुषार्थ विना बहु न्यर्ग है.

न पुरुषार्ध विना अपदर्श हैं।

त पुरुष यो दिला (इ.स. इन्हें)

e (*14 sp. 1.44 sp.

कर्र व्योत्तेत्रता मफलवा वर नुस्य बरो, उठी, पुरुष हो पुरुषार्थं करें। उठो ॥३॥

न जिससे कुद्र शास्त्र हो यहाँ—

٩o

सफलना बद्द पा सकता कर्दा ? चपुरवार्थं भयंकर पाप है. न उससे यग है, न प्रताप है। न कृषि-कोट-ममान करा, पठा

पुरुष दा, पुरुषार्थ करा, पठा ॥४॥ म-्ज-ताबन में जय के नियं—

प्रथम ही हद बीक्य चाहिए। निजय ता पुरुपार्थ विना कहाँ कठिन ई चिरतीवन भा यहां।

भव नहा, वन-सिधु तरा, वटा, पुरुष दें।, पुरुषार्थ करें।, उठा ॥४॥

यति सनिष्ट सहें, सहते रहें। वियुव बिज पड़ें पट्न रहें। Rea u gerin er an-

नजीत कता, नज क्या 'कर क्या तम · 1 - 4 12 at 27

स्टिप हर्ग संस्थाय कथा यहाँ १५०।

यदि प्रभोष्ट सुन्हें निज स्वत्व हैं;
प्रिय सुन्हें यदि मान-महत्त्व है।
यदि सुन्हें रखना निज नाम है;
जनत में फरना कुछ काम है।
मनुज ! ने प्रम से न हरो, उठो,
पुरुष हो पुरुषार्य करो, उठो।।।।

(=)

बही महत्त्व है कि दो महत्त्व के लिये मरे

विवार ला कि मत्ये हो, न सत्यु से हरो कभी;

मरो, परंतु यो मरो कि याद जी करें सभी।
हुई न यो सु-प्रत्यु ती हथा मरे, हथा जिये;

मरा नहीं वहों कि जी जिया न भाषके लिये।
यही पशु-प्रदृति है कि भाष हो सदा घरे,

बहों मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ॥१॥

इसी ददार की कथा सरस्वती बखानगी; इसी ददार में घरा कृतार्थ-भाव मानती। इसी ददार की मदा मजीव कीर्दि कृतनी तथा उसी ददार की समाम सृष्टि पृतनी। घरार जानभाव व समाम विश्व में भा वहा सन्दर्भ की का सन्दर्भ के निया मर

कर्मेश्योक्षेत्रना कुषाम रिनिदेव ने दिया करश्य वाल भी. तचा दर्गीच ने दिया परार्थ करिय-जाल भी। चुगानर-चिनीश ने स्वमास दान भी किया.

32

सहर्षे थीर कर्ण ने शरीर-वर्म भी दिया। द्यानिग्य देह के लिये धनादि जीव क्या हरे. बड़ी ममुख्य है कि जो मनुद्य के लिए मरे।।३॥

सहामभूति चाहित, महा विश्ति है यही. बशाक्षणा सर्वेव है वर्मा हुई स्थय मही। विषय-बाद बुद्ध का द्या-प्रवाह से बहा:

विनीत लोकवर्ग क्यान सामने कुका रहा? ब्दा ? वहीं उदार है बगदकार जो करे,

बद्दां मनुष्य है कि जा मनुष्य के नियं मरे ॥४॥ रद्वान भूल के कभी मदीय तुल्छ विश्व में.

सनाध नान आपकी करा न तर्क चित्त में। श्चमात्र कीन है यहाँ त्रिदेशकनाय साथ हैं. द्याल दीनवधुक वह विभाज हाय है। धानीय सारयहीन हैं, धारार साथ जो सर.

वहा मनुष्य ई कि ना मनश्य के लिय मर ॥५॥ स्तरत सम्बुरिन में सन्तर देव हैं खरे. समल हो स्व-प'त् जो बटो बहु बहु पह ।

परम्पराध्यस्य से घटा, तथा पड़ों सभी, इसमें इसस्य-इंक्स से इस्पेक हैं। घड़ों सभी। यहां न यो कि एक से न काम और का सर, यहां सनुष्य हैं कि जो सनुष्य के लिये सरे॥६॥

"ममूष्यमात्र वेधु हैं" यहां यहां विवेक हैं। पुरायपुर पस्त्रभू पिता प्रसिद्ध एक हैं। फलानुसार कर्म के कवरय वाहा भेद हैं, परंतु कंतरैक्य में प्रमायपृत वेद हैं। क्यार्य है कि वेधु हो न वेधु को न्यवा हरे, वहां मतुष्य है कि जो मतुष्य के लिये मरे॥ऽ॥

—भैधिलीसस्ण् गुप्त

पाट-सतायक

श्रापयर्ग - में २ हेर्स - श्राप्ति क्रासिष्ठ क्राइ श्राइने रहें । यहाँ स्था - में १ वर्ष - १ हर्ग रहार देशावन है इस श्रास्त स्थार है कर्म है है १ वर्ष - १ वर्ष - १ वर्ष - १ वर्ष - १ वर्ष स्था - १ वर्ष - १ वर्ष

चित्रप्रस्ति है । अस्ति स्वाह्म स्वर्णात स्वर्या स्वर्णात स्वर्या स्वर्णात स्वर्णात स्वर्णात स्वर्णात स्वर्णात स्वर्णात

왕-41년

· 中国 中国 中国 中国 海州 (中海 中國) 養土

कर्मव्या सेजना

48 २—प्रयम कविता का शाशता लिखकर उस पर एक लेख लिसे

उसकी सदर पन्तियाँ कडाय करो । ३-दितीय कांपता के आधार वर एक पत्र अपने किली मिन

लिखो जितमें इनकी उन्न पिछवों का उपयोग करों। y-दितीय प्रिता के हुद व में "उसी उदार" पद की क्यी पुनर

की गई है, इसी प्रकार तुम भी किसी पद की पुनवक्ति करें। ५-- क्या श्रमं है. बाक्यों में प्रयोग कर सममामी--

वरस्वरावलय, अतरेक्य, प्रमत्यंश्चक, आत्मभाद, वर्जु-पर्

६—गुरावाचक सहाएँ वनामो— परस्पर, विवेक, प्रमाख, खेलना ।

rel प्रकार भागवाश्वय सत्ताप् यनाधी-शमय, प्रमाण, बंध, तुष्त्र ।

u -- माविप्रद समास बताह्यो---वरत्यसम्बद्धः, पुरास्त्रपुरुषः श्रालंडः, आत्मभावः, पद्धः

विकोध साथ । पूने सुन्द शिसी जिनका समानात कडा वा सके—उनका मी करा-श्रंक, तक, बाद ।

• __ गामा अमानो स्तीर प्रयोग सरी-ध्यवर्य, श्र वश्य सामने—साम मे ।

१०--- मिस मिस श्राची में प्रयुक्त करे।---काम नवा चा भाव मान ।

PH +T+ 3 N++ 37 1

4157

, पता सुनामा ग्री

(६) शेर का शिकार

रिकार सेन्से की प्रया बहुद प्राचीन है। की साम मीसाहारी नहीं हैं वे भी सिंह बाव प्रीप बीठा प्राप्ति हिंस गंदुभी के शिकार की दुस नहीं समसन्देश्यासाय प्रीप महा-मारव प्राप्ति प्राचीन इतिहास-प्राप्ती में सुरका का उन्होंग निकार है। सार्थेट में महारोजन के साय-साथ जहां कार्याम है। दहीं साहरीजन कार्यों के कार्य की शक्ति भी बहुदी है।

कर-कारकारी और नेस-मेटर के प्रधार में प्रय सिंह, चीटा, बाप, हाओ धीर रीव भागि वेंद्र बन्दियों से बहुत दूर यसे गए हैं - बदाइनदार्थ जिल्हा के इंडेमीर्ड प्रचान मीत के चंदर हम प्रवाद के जिल्हा का सिनान किन है। पांद्र देगी नववाहों में प्रमों कर-कारकारों का बदना प्रचार नहीं ने बहुते मीटर कीर रेन की सहकी का जान मी कम ही जैला है इस्तियों बहुई में बहु से पांद्र देगा के स्वाद्र की प्रकार की बहुता की बहुता के ही सिना कम मीटिंग की बहुता के ही सिना कम मीटिंग की बहुता कर है। इस्तियों बहुई में इस समय मीटिंग सुनागह साम भी कम हो प्रवाद की बहुता कर है। इस समय मीटिंग सुनागह साम भी सुना की बहुता कर है। इस समय मीटिंग सुनागह साम भी सुना हो सीटिंग हो है

हम का राज्य किस्सवह क्षेत्र हो है। यह का बद्धा साथ चौरक सकार चीर बारजी हम तमा है। जुल्मा चीर सार्थुस साथ तम्म का रता है। तर का बारक का ता प्रार्थी है। एक दिल्ला है। तह हो कि का लगा कर साई साथ तमा हमाय 38 शेर का शिकार जाना है। उसके निकट हो बकरो भादि कोई पगु वॉप दिर

मनाम पर से उस पर गीली चलाता है। दमरी विधि यह है कि लीग यक विगेष दंग से शेर का समझारकर जंगन के गई खुने स्थानन्त्रे से चाते हैं । बढ़ा शिकारी हायिये। पर बैठे हुर दिन के समय प्रसे वंहक का निशाना बनाते हैं। शिकारी स्रोग पद्दली विधि की उनना पसंद नहीं करते।

यहं विभित्ते। धन्ती के व्यास-पास से बातों और वापी के धराने के लिये ही प्रयुक्त समक्ता जाती है। इसरी विधि-हार्य पर से दिन के शसय बार का गाली से मारता-मन प्रका से धपत्री है। इसमें शिकारी की बोरता भा देगी जाती है

राजा लाग जब द्वाची पर संदार देवकर केर का किसी स्पेत्रने जाते हैं तथ प्रतके साथ बहुत-से सराक सिवाही हैं। आदियी की दिलाकर शेर की इस्कनेवाले एक विशेष जी

के अमृत्य ओ रहते हैं। ये श्रीम शिकारी कहनाते हैं। पीढ़ियों में ये यही काम करने हैं। इनकी दोर के स्वर्ध

का पैछक शान रहता है। शेर जय रास की मार के बाद मं षायम श्राता है तत्र ये असका ध्यान स्थते हैं। इतक ही में लम्बा लम्बा लाडिया हालो है। लाडा क स्मिर पर भी

द्विताकार भारका काम जान न नहा । उद्यक्त काम सन् पर काक्यत कर द ना इस भाज स राका । सका।

लगान क जिय बाह बना हाता व नगर आहियाँ

जाता है। रात का जय शेर उसे त्याने व्याता है तब शिकार



शेरकाशिक 35 जक्र गोली स्वाकर भाग जावा है '! ए ह. ५१ मा डिंग

दमकं पाम पहुँचते हैं। गिकार क घने जंगल यह वड़े दुक्कों में हैंटे रहते हैं। रा बाय यह ये। हे गरन बने हाते हैं। एक रास्ता कोई प्रवास में

थाडा शता र सार वर्षन के वैर से बार्श्य होकर उसकी सी तक पना जाता है। जंगल में नकड़ा धीर चास इन्हों मार्गी से बाँ कर लाई जाती है। ये मार्ग शेरी की एक जंगल से ही है

दूसर जगल में ल आने में मा काम देवें हैं। इस मार्ग की की करते समय द्वी शेर पर गोलो चलाई जा सकती है। धने जेंग में, । नां की बाट के कारबा, निशाना खगाना कठिन देखी गिकारी लीग शेर की ससकारकर इन खुले शाती हैं मात है। तथ राजा लोग हायी पर से उस पर गोली चलाते हैं।

का दोकने के जिये सबसे घटका समय दिन का तीसरा^{दे} देखा है। हाथी एमें सधे होते हैं कि वे शेर के मुँमालाकर बाई करने पर मा अपने न्यान से नद्दा हिलते। प्रस्येक हामी मद्वाबन क स्रतिरिक्त वीन बार बैदक्तवालं मनुष्य भी रहरे

रात की पैट अर खाने के बाद दिन में सीयें हुए हैं त्र राज स वर करा कल नहां कर दालगा, यह कहनी के जरहरू स्था संघ का पार करन समय प्**ड**ेर

क १ ८३ इस के लाग तिकल**न क**

ण्य करते का उक्त का का

सकतां के कादमां बनाकर—उनके सिर पर पगड़ा, गत्ने में कमीड़ और नीचे पायजामा पहनाकर—इस तुले रात्वे के साय-साथ एक पंक्ति में गाड़ दिए जाते हैं। कहते हैं, एक बार एक घेर ने, इनको सचतुच का कादमी समक्त कर, इन पर काक्रमण कर दिया था। पर उनको क्षयल खड़ा देखकर वह डरकर पोस्ट भाग काया था।

रिकारी लोग इन बनावटी आदिनियों की यह चुपके से गाइवे हैं, क्योंकि इरा-सी भी भाइट हाने पर धारियोंकाले कंतुं को संदेह हो जावा है भीर वह वट पहाड़ के अपर भाग जावा है। रिकारी लोग जब शेर की हाँकने लगवे हैं वब बिहाल

का एक प्रवद् किया जावा है। संसकारवे समय कास्याओं के सतुसार कभी वो शिकारों विश्वकुर चुपपाप रहते हैं और कभी शीर करते हैं। शेर को शिकार करवे समय कभी कभी सकड़वारे सीर सीमर कादि दूसने जेतु भी निकल कादे हैं। यहाँ शेर का समसे कमलार भाग उसकी केये होते हैं। यहाँ शेर का समसे कमलार भाग उसकी केये होते हैं। यहाँ शेर का सामसे कमलार और पापत होकर शेर कभी कभी इतने जार से कालमय करता है। पापत होकर शेर कभी कभी इतने जार से कालमय करता है कि वह उदल कर शाय के लीई पर पहुँच जाता है। शेर के कालमय करने पर हाथ यह से पिर कर से कालमय करने पर काय से साम से साम हो गर वहीं शिकार से साम से साम से साम हो गर वहीं शिकार से साम से साम

कई भाग भारकार से पैतन मेर वर गाओं नामाने की बीत बीका करने हैं। पर गये राज से पैदन कर गर गार गार भाषाना वाल्याय में कन नदा है। जब तक तर बार को जाब इंदन का सिनाफ में सींगी न गये पह सीचा जानी नामाने बार्ज पर भारतर है सींग यात बहुत भारक द्वारा नहीं न

केंगा है। इसके बालां कीर वं 15 थे बाब संदश कर मान है।

है भारताओं की मेर्ड भी गरी गरी गर।

rer me freie

٧,

महीं करते। एक घार माना शुरू कर देने पर किर पाई उस रिक्को के प्रकार की—पाँठ पत पिल्को का प्रकार हो— कितन मा तेर कर ता, ये शेंदु देशों नहीं। इस प्रकार की सहारत से निरान बायने से बार बामानी पहले हैं।

दिस्मते की जाति के अनुबार से मैंदने की शांकि उत्सी हैंक नहीं होती परेतु इतकी सुनने को शास्त्र बाहरसैसमझ है। टरिक-मी भारत, गोसी, या कामान्यमां से ही तेर या चीता हुए मारा जाता है भीर एकर सारी रात दला महा भाषा । से िस इन् यह रामने से वापने विकार का इंडे-लिई रेगते हैं। किर यंच्योर पादे में लाकर इस पर आपतने बीर एक ही बार में पेटा मारवर उसका काम तमाम कर देने हैं। दश की मार द्वारत के बाद बाद कीर कान है बीप किर किसी हमरे सका हमें यान शारा है। इस समय बाँट दाय शिकाही की रोजी से प्रायम हो जाया है। कि बात की दिन बहुते से दहने ब्रदन बनार या १८५१ के हाएते का बाहबा व करता प्राप्ता त्रिस स्वयं या चंदार शास्त्र क्षा स्वयं क्षा स्वयं क्षा स्वयं क्षा स्वयं क्षा स्वयं क्षा स्वयं क्षा gray areas and र्वे करास रक्षा स्था

The second secon

शेर का शिकार कर रिकारी पर बाकमवा करता है। फिर भी विजरा वर्ग

सं प्राप्ता है।

85

चं रकारमय निस्तब्ध बन में शुपचाप बैठकर इन मंड जेनुकों के काने की प्रतीता करना यहा रोमायकारा है? है। पिकर में बंद बाय एक लंबा बीड़ा जंत दें। पहता पर जगन में वसके पाने थीर काल धरवं इसके वर्ड गाई।

चीतों के साथ प्रेंक्प से मिल जाते हैं। दृशों के पने ह में से छनकर पहनेवाले सूर्य के प्रकाश के कारम रन

पष्टभानता थीर भी फॉटन हा जाता है। भव एक दूसर प्रकार की शिकार का द्वाल स्तिए। स भारत की नदियों से बहुत पाया जाता है। जो भी रेड़े मनुष्य इसके प्रते में केंग जाय यह इसे चर्माट कर वानी

में गाना है। निवर वीसिया छित्री सीर वर्च निवी महाते हुए बड़े बड़े पहिसाली के बाग बनते हैं। यह त्रमु कारणी साम्युष पृष्ट की लवेट स कावसे बास्टर की प

में गिरा क्या है। फिर तमका दश्य या पर पक्षकर वाभी के भी वे पनीत की जाता है। तब बह ह्यकर भर व है तब यह इस क्रम्य क क्रम जिल्ला समा है।

समार वापाल का सरसाव तथा वर पाक्र बक्र किसार की पर देश बापने कारत है। तक १० से ३ मास है पहिंदे है वहा ताककर गोली मारक्षा है। सगर की वहां जगह सबसं कमज़ोर होतों हैं।

गाना रशकर मगर बनेक थार नदों में भाग जाता है। किर इसका पकटना कठिन होता है। निदेशों के किनारे एक यिगेष जानि के लोग रहरें हैं। वे मगरें। से बिलकुल नहीं टरते। वे हैंगीटा पहन कर, हाब में बौस लिए, पढ़ियाली से भरों हुई नदों में घुम जाते हैं, धीर नहीं पानों में से कपर को लहू निकलता दायता है वहां थांस से टटोलकर दुवकी लगाते हैं भीर पायल जन्तु की किनार पर घसीट लाते हैं। कहते हैं, इन लागी के शरीर से एक विशेष प्रकार की गंध भाता है। इससे मगर इनको नहीं खाता।

रेर का शिकार 88 प्रवर्ते में सुध्यर मन्द्रय का काम समाम कर देता है। इसें! रचा की माशा खुपचाय पड़े रहने ही में है। देजाय में एक विशेष जानि के लोग जाल सगावर है

से दी स्थर की मार डालते हैं। कुछ वर्ण हुए रावी नहीं फिनारे इस लोगों की सुझार का शिकार करते देखने का मर लेक्फ को भी मिला था। मुकार की जाल में वैसी इन सीतों ने इसे कीसी अरकर गिरा दिया और i'ई मार्न कर मार शाला। इस कुरती में एक चादमी का दान है

के दौतों से धायन भी है। गया था। श्तरगांश और दिश्य के शिकार में वाजी, जिकी।

कुत्तों से सहायता की जातो है। एक समय एक शिकारी में सम्मिलित होने का मुक्ते भी मीका मिता था। यही ए म्परगीश कुभी से थणकर लिए गया। परंतु अपर ४४१ र बाज मैं वस देग्र निया । वह वस धर ऋवटा सीर कार्ने हैं पकड़कर उसे बाकाश में ले पड़ा। अब अक करे बहा व वर्ष गए यह वसी आकाग में ही वंदाए रहा । वनके पंहुंब जाते धमनै क्रसे प्रदेश पर गिरा दिया और कुलों ने प्रसे दर्शम जिंदी ---

distantes यहॅमांबर्ग-व्यक्तिता, देला देशे बना है। आक्रमण-दर्व मस्मिनक-ादमाश, श्रवस्थात हेण, बना बुत्रा ।

·—क्रीय का शकार देस करा जाता है, सहेद में लिला।

२—देश कार्य जी प्रकृति का कैसा प्रतिबंध यहाँ दीमता है ! २—दन किनुवाने पान्यों के। देशरे जीन दर्शी के समान क्षत्य बोहे-साने करण करेंग

इदर्भार, बाना कुमी, लाल पमा, सम्बा बीड़ा । ४—नारामे अपनी जीर बाबमी में प्रदेश करें — टीस टाउमा, भूगा वा सामान बरना है, निरासी, बनामा,

याम नेगाम करना।

५.- प्रतर बताझी और प्रयोग करके समझाओ --धीरे-धीरे, धीरे से धीरे, बड़े बढ़े, बड़े से **घड़े, बड़े के बड़े !**

६ - यहाँ तन राज्यों के साथ दे। कारकों की विभक्तियाँ सगाई गई हैं, श्रीर क्यों ! इसी प्रकार के तुम भी कई उदाहरए दे। !

७--भित्र भित्र मात्राधों से वीन बीन शब्द बन बाते हैं--

श्चमल, रोर, जाने, रैल, खुले । 5—स्वारमा क्से श्रीर समक्षश्ची केंत्रे बने हैं—

्राइदौड, बनाबदी, स्वकारना, श्रासन्त्रास, वायनामा ।

९—मूल रान्द पताते हुए नियम लिखी—

दैतृक, श्रवशिष्ठ, हिस ।

१०—प्रथम प्रमुच्छेद का वाक्य-विश्लेपण करो।

संकेत—

१—प्रत्य पशुद्धों के शिकारों का परिचय देता। २—प्रकों में ऐसी रियाननों का विस्तृत्व राज क

९-- महरी में देशी (स्यावती की दिखाकर हाल बताना।

सना श्वनाहरू मो स्थाप क्या है ? साथ करते हैं बार ! साथ ना साथ हा है। यह कहा की सापदा सी यह सो कोई पुत्रने का हंग है ? पुत्रा होता कि साप को ने। बतना देने कि हम सायके पत्र के बाउक हैं सीर ! सायम-भेपाइक हैं स्थाप साथ पत्रिज जी हैं, साथ ! जी हैं, साथ सेठ जी हैं, साथ लाजा जो हैं, साथ बाय हैं हैं, साथ मियां साहब, साथ होने माहक हैं। साथ का यह ते कोई महत की विदेश हो से साथ स्थाप यह तो कोई महत की दीवि हो नहीं है। बाथक नदार्ग बह हम सा जानते हैं कि साथ साथ हो हैं दीर हम मो गैं हैं, गया हन नाहभी की आ संबंधोंनी, यसकी मी वार्षा

खुँदिइई कॅंगरना (मिरज़ई), सीधो साग, विज्ञायती पाप, हैं बाडो भीड साहधाती हबस हा कहे देवी हैं कि— 'किस राग की हैं साथ दवा कुछ न पूछिप.''

आरण्या साहज् (का इसमें पूछा ता स्वो पूछा १ इसी के दर्भकार आर का बान स्थल हैं बा नहीं रोजस के का कर अथन 'त्रय तथ' और के प्रति दिस्तरात्र में इस रूप के बद आरथ स्था है १ इसके उन्तर से आरथ केहिंगी

१८४२ जन्में ज्या त्या वसके सम्बद्ध रेको

एक मर्वनाम है। जैसे मैं, नू , हम, तुम, यह, बह भादि हैं वैसे ही छाप भी है, और क्या है। पर इतना कह देने से न हमको संवाप होना न आप हो की शब्द-शाख-हान का परिचय होगा, इससे भ्रव्छे प्रकार कहिए कि जैसे 'में' का गब्द अपनी नम्रता दिखलाने के लिये विशो की योनी का धनुकरण है, 'तू' राज्य मध्यम पुरुप की तुन्छवा व श्रोति के मुचित करने के अर्थ कुले के संवाधन की नक्ल है। हम. . तुम संस्कृत के ऋईं और त्वं के ऋपक्षण हैं, यह और वह , निक्ट और दूर की वस्तु वा व्यक्ति के दातनार्थ स्वामाविक उच्चा-रु हैं, वैसे 'भ्राप' क्या हैं ? किस भाषा के किस शब्द का शृद्ध . बा मधुद्र रूप है सौर आदर हो में यह था क्यों प्रयुक्त होता है ? हुत्र की मुलाज़मत से मह ने इन्टेड़ा दे दिया है। ती दूसरी षात है, नहीं तो भाष यह कभी न कह सकेंगे कि "भाष लक्की फ़ारसी या भरबील," भ्रमवा "भ्री: ! इटिज़ एन हॅगलिश वर्ध'.''जब पह नहीं है वा साहमलाइ यह हिंदी-शब्द है. पर कुर मिर-पैर, मृह-गोड़ भी है कि वों हो ? आप हुटते हो सीच मकते हैं कि संन्ष्टत में अप कहते हैं जल की भोर गास्तों में निया है कि विवास ने मृष्टि की झादि में उसी को बनाया था तया हिंदों में पानी सीर फारसी में साब का सबै शोमा सब च पतिष्टा भारि हम्पा करता है। जैसे--- पानी उन्हरे या नरवारिन का उटकाह नो के मोल विकासा, <mark>तथा "पानी उत्तरि</mark>सा रह पूरी र प्रतर । इस्पेरनेझा **का शब्द है।**

٧.

का गद्द किर विसुधी ते (वेदया से भी) वृद्धि जाँदें," है एरम्सी में 'बावक आक में बह अपनी मिला बैटे हैं' इन

शाव

इस प्रकार पानी की अ्यष्टना चीर अध्वाका विवार सीत पुत्रवीं की भी हमी के नाम से बाद पुकारने हते हैं

यह बारका समझना निरर्शक ते। त हेश्या, सक्षापन ग्रीहरू। का साथ सारश्य निकल सावेगा पर गों पत्रीय कर सीत ही यह शंका भी कोई कर बैंडे ना वर्षास्य न हीतो कि ए

की जन, बारि, की है, नीर, नाय इत्यादि थीर भी ना की है पनका प्रयोग क्या नहीं करते, ''बाव" ही के मुहत्त्व

कर क्षत्र में मार्ग है ? काववा पानी की मृद्धि सबक बादि है की जारब एक ही लेगा। का प्रमुक्त माम में दुलारिए ने हैं मुण्य देश सकता है पर बाल तर बावन्त्रत में होती की में

धाय बाहा करने हैं, यह बायती बीत-मी रिजात है ? वर्ष की भी बह मकते हैं कि वाली में गुरा वाह जिनते हैं. गाँच धमकी नीचे हा प्राची है। मा क्या बाद हमकी है धान बाद बन्ध बनारामी बनावा बाहर है ? इसे हैं। है कि काथ बाजीरात हुआ ते। इस बात के बहते ही बाजी

के अनीते क्षेत्र फिर कर्म यह उद्देश में पर में स करे महरूच मुहदराश बाचम से बाप बाप की माना है। क्या है। एक स्थान परेना सम स ना साम्यक ध्रिय है

migerer dente e en et le vale en elette inte चारी है, चनेने में कवा करनायदवानों के कारों कार कार र किया करा, इसमें शिक्टा को मिनमिनाइट पाई ठाठी हैं। रूर उन्होंने इसकी मामाना इसमें दी-चार बार सममापा, रूर बहु 'आप' के क्यों मानमें लगे ' इस पर इसे कुँमलाइट कुटो तो एक दिन उनके कार्ड हो कीर 'कार' का रहत हुँद 'पर नाते ही इसमें कहा दिया कि ''कापकी ऐसी दैसी।' १ पर नाते ही इसमें कहा दिया कि ''कापकी ऐसी दैसी।' १ पर नाते ही इसमें कहा दिया कि ''कापकी ऐसी दैसी।' १ पर क्या चार है कि तुस निज बनकर इमासा कहाना नहीं जाते हैं 'प्यार की साथ है कहाने में जिल्ला स्वाद काठा है उठना बमाबट से बाप-मार्थ कहा हो कसी सपने में भी नहीं कार्न का १९स उपदेश की वे मान गर। स्वाद वा पह हैं कि केन-साक में, कीर्द देशन स है ने पर भी, इस रायद का प्रदेश करूत ही कम बर्ग नहीं के देशवा होता है।

हिंदा की करिया में इसमें देत ही है इ इसमें युक्त पाय है, एक किपकों न बाई ताके बाद की न बाहिए, पर पड़ म हो किसी रिडिश्ट क्या का है और न इसका काएप स्तेष्ट्र-सबद हो है किसी उने-पुने किसे ने कहा सारा देते हैं। पद्य की किसी उने न सका कि बिंदा में मी कारा की हैंदा है इसर अगर ही की की पढ़ नदेश हैं— कार द्या ने सन इस इस्ता का देता नक की बाद मा उत्पाद पर पद मी का पूरा का नह है इसमें कारा कदा का काइ हर मी का पूरा का नह है इसमें कारा कदा का काइ संदत्त नहीं कर सकता कि प्रेमी-समाज में "धाष" का र नहीं मैं र की प्यारा है।

संस्कृत भीर फारसों के कवि मां रहें भीर हैं हैं
भवान भीर गुमा (र का बहुवधन) का बहुव धार्स हैं
करते। पर इससे धारकों क्या सहजब ? बाद धार्स हैं
कावं का पता नमाइए हों, तो सर्वेचा मानतीय हो है
धारा है, यहाँ तक कि न्यारागाओं में प्रमाय-पनुष्य (रू
धारमा क्यार गांदर) के धारते वाहन रमाया का है
धारा है, यहाँ तक कि न्यारागाओं में प्रमाय-पनुष्य (रू
धारमा, यवमान भीर गांदर) के धारते वाहन गांदर मानतीय हो हो
धार निवार है कि धारमार्यहाः महन गांदर्गा का है
का वयन महरमादि हो के समान ही हासारिक हों
धारी समक्त ने। कि धारम जना रख्य धारमान भीर गां

 ाममें ने जब कहा जाय कि "आपका क्या कहना है, आप ा यस सभी दातों में एक ही हैं" इत्यादि।

ध्य तो भाप समक्ष गए होंगे कि धाप कहीं के हैं, कीन ें कैंपे हैं। यदि इतने वह वात के वरगट से भो न समक्षे 'ते तो इस डांट से कधन में हम क्या समक्षा सकेंग कि 'धाप' संस्कृत के धाम गदद का हिन्दारुपान्तर हैं धीर 'तानतीय कर्ष के सुननार्थ उन लागों (कधवा एक ही व्यक्ति) के प्रति प्रयोग में लाया जाता है जा सामने विद्यमान हों, बाई यावें करते हों, याहे बात करनेवालों के द्वारा पृद्धे-यताए 'ता रहे हों, ध्यवा दो वा अधिक जनी में जिनकी चर्या हो 'रही हों।

कमां कमां उत्तम पुरुष के द्वारा भी इसका प्रयोग दीवा है, वहाँ भी शब्द धीर कर्य वहाँ रहता है, पर विशेषता यह 'रहती है कि एक वो तय कोई अपने मन से आपकी (अपने तर्दे) आप हो (आप हो) तमभता है, धीर विचार कर दिखिए वा आला धीर परमाला की अभिन्तता या चट्टपता कहीं होने भा नहीं जानी पहता, पर बाह्य व्यवहार में अपने की अपने कहने से यदि अवंकार की स्व ममभिन ता यी ममभ न्यां ता कि को अपने हाथ में किया वाता है और जा बात अपनी नामभ न्यां ता कर काम अपने हाथ में किया वाता है और जा बात अपनी नामभ न्यां ता कर करने हैं उसके पूर्व किया अपने हाथ से अपने की हम अपने का हम अपने हम अपने की हम अपने साथ करने हैं कि हम अपने की हम अपने हम अपने हम अपने की हम अपने साथ नाम नामभ न्यां ता हम अपने हम अपने की हम अपने हम अपने हम अपने की हम अपने साथ नाम अपने हम अपने

44 कर मेंगे। धर्मान कीई सदेह तहाँ है कि इमने ता संपादित हा जायगा, 'हम चाप जानते हैं' धर्मान ष्तनाने की बावश्यकता नहीं है, इत्यादि !

सदाराष्ट्रांय भाषा के बापाजी भी वतीम वि थीर आमें के मिलने से इस रूप से डा तए हैं तथा

या म माने पर इस सता मकने का माहस रारते हैं में बारव (पिता, बालने से बारवा) थीर श्रापीय । पांचा (विका) पांच (धर्म-विका) ब्यादि भी इसी मा हैं। ही, हमके वसकते वसकाते में भो जी जरे के एकाइ (सर्त) ता दमके दर्द है, क्योंकि इस में

सीर दीर्घ दीनों सकार का स्थानायन्त (A) 🖹, सी भी। 'विकार' में बदन लेता कई आधारी की नी टी (T) भी बहु ना 'लकार' सई है। फिर वर्ग में मोलिएमा कि प्यात साक्ष्म हमार 'सापा वरच छूड में दर्श हैं।

इबारे मात में बहुत-से उच्छ बंश के बालक भी वार्र की करता बहुने हैं, इसे बाई काई साग समाने हैं कि मानी के बहुवाल का वज है पर वह इसकी समान हैं दै । सुमानशाम माहया क सहक कदन है पारवा श्रीर

मेवान क रण्ड म संसार' का उपनारश नातक ना कार्य कृषा वह वीतर । का सकत द्वार प्रत्यावानी की

नक्षा है का नृक्षा साम काल से साम सामा है

अनि स्मृतातो को भीर रहत को टट्टी का तत्तो अर्थीत गरम इस काय। किर अव्याको अव्याकद्वना किम नियम से सा। द्वा, साम में आप और अव्या तथा आया की सृष्टि है है, उसी की सरववातों ने स्वद्या से क्यांतरित कर तिया सा, बदीकि इनको बर्टमाला से "पकार" (पे) नदी सा।

मी विभाग परवा, बाय, बायू, बच्चा, बाया, बायू छादि सी सी से नियमने हैं, कदेशिय जैसे प्रशिद्ध की वह बेलियी में दकार' की 'पनार' व 'कुकार' से बदल लेते हैं, जैसे पाद-ज़ाह--दादग़ाह थार पारमी--पारसी भादि, देसे ही बहे भाषाओं से शब्द के कादि से 'दकार' सा निला देते हैं, जैसे श्री शब—चप्रे शय नदा श्रीकासर्—वश्रीकासर् इत्यादि भीड़ राष्ट्र के कादि के दृश्य करतार का लेख को है। जाला है, र्रेने कवाहम का कादम र (स्तुनई कादि बन्दों से देखें) हुरद काबनशीय मृहद्यां में कामपट के यहारी हरद द्वा द्वारी प्रकृत और द्री लामा है, रैसे, एक-एक, ब्याद-स्वाद, बाहि । ब्रह्मच इन्द्र की दीर्थ, दीर्थ की इन्द्र का दू कु बार्टि की इति वा सीय था तथा ही बरता है, पिर इस बयेर सकते कि लिय प्रदर्भ से बाकार बीर प्रकार का संदर्भ हैं। गुर्द बाई से बेहुगुर की भ्रांत किनान हो कि रह समन्त्र समाह के प्राप्त ಕ್ಷಮ್ಯ ಮುಖ್ಯಮಗ ೧೯೮೮ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳ ಕಟ್ಟಿಸುತ್ತಿಗೆ ಪ್ರಶ್ನೆ

चाप

88 भव ना चाप समक्त गए ≡ृकि चाप क्या हैं ? इवं ममका ना दम नहीं कह सकते कि आपसमकदारी के की हाँ माप दो की जिल होगा कि द्वडा-खदामकी समर्भ

पमारी क यहाँ से मात्र लाइए किए साप ही सरिएमा कि बाद "कीन हैं ? कहाँ के हैं ? कीन में हैं ?" यद ना सहा सर्क भीर लेख पढ के भाषे हैं बाहर ही

ती हमारा क्या कपराथ है ? हम क्वित जी में वा "गावाग । भाग न समका ता कार्या (भवने) की के 🖖

पदां छैं (है) । हैं। बाव भा नहीं समके ? वाद रे —ব ঃ সৰ্পান্যপৰ্ (নিধ নাকাশিক নি)

वाद-महायक

दानमध्ये-प्रवाहमध्य, वातीवार-व्याममामानी, 🦿 गामी - थथः -- में व + शाम - माने राका . ग्रेमी नैसी - सर् बुम्ब--वुन्तर स्वयन्तर, सात्र पृत्य-(१इन्द, वर्मा)

पिरुक्तम पुरुष, साम्य --शोर, व्यक्ति--रायराच, दुसर सर्व । क्रम्याम

र वहाँ कार क्षेट्र को कारणा है कार कहा गया है स्वी

, .. " महा किल दीली की साथ है, इसकी द्वीप अपन्य सम्में दिखलाओं।

४—शिपरिवर्षे ।कस्म प्रीतस्या ५ ता संस्थानस्य २० सहायस, हर्षे हैं, स्थात २० वस और १००० सार

 प्राच्याक्य विद्यालेखन् वर माराह्य (तरण भरिक्षों की वांचला के १० १५ (सान्या है । १९ १८)

m—राम्योः केने विचार्त हें महत्त्वे क्षण र दश्यर्थः सम्माणः

द्वार कीहर जिल्ले हैं। जनस्य समझते समझते, समझ और जुला जाए, उन्हर, जा स्तार

<-- (क्षेत्रक क्षा द्वार क्षणाई बरावर प्रदुष्ठ वरे --बरावा जहना, क्षारा, ब्राव, टावव ,

रेक्स्परित सब्दें हैं साद है, हर्रे अवन्यव स्त्री है प्रमुख हर्नेस्स सहस्र कर कर कर करने

timer the street of the second .

the making and read their shirt he will be a mere as

(=) शिकागा का रविवार

रिकामा संसार के प्रसिद्ध नगरों में से एक है। उनी स्यान धनी जान-डी-राकके नर-द्वारा स्थापिन विरवित्यान्य ह पर है। अमेरिका के बड़े यह कारम्याने पुतर्लापर भी बही हैं। इस कारगानी सहर एक कोस के लीग कास करने

इतने बड़े प्रसिद्ध नगर के लाग अपने धावकारा का समब् काटन हैं ? ये ध्याना दिल कैसे बहलाने हैं ? इस नारी देखने लायक क्या है ? इस । इसा का उत्तर हम इस

देते हैं । भारण कावका शिकाश की मेर करावे इसके की भागीय देश्य दिश्वार्थं, सीह बावकी बननाव कि इस वर्ष सरारा से कील कीन स्थान दशेशीय हैं। साथ ही इस लगर के निवासियों की शहन-सहन का स्थारा भी देने क

जिसमें बादको बसेरिका के इस प्रांतवानी की जीवनक के विषय में औं हुइ आरान द्वा ताय । इस काम के नि^{ने हैं} र्शियार का दिन धुना है। देशी की महिमा का इस इस व

में बर्टन करेंगे। इसमें हमारा श्रताह मा मिद्र ही हैं भी र बावकी वर्ष भा बावस ही वायसा हि गिर्मी निवासी ब्रिकार की छटा किस सुरह सामन है। eftere ger miten ? urener u sie B'.

मा अल्डिस १८४३ ४० १ । १४ । १४ ।

प्रोक्ता में बहाँ बहाँ ईमाई होगों का राज्य हैं, सब कहीं हुतों कीर दक्तरों में रिववार को लुट्टो रहती हैं। परंतु रिववार ते लुट्टो किस तरह माननी पादिए, यह बात ईमाई-धर्मावर्य-गेरों के बांच रहें बिना कच्छा तरह नहीं कर्मव की जा सकतों। ईसाई-धर्मी में रिववार को काम करना नना है। इसिंहरे

राकागों में सब दुकारें, १ सकातय, कारदारों आदि इस दिन दि रहते हैं। क्या निर्धन, क्या धनवान, क्या नोकर, क्या आसी, क्या बातक, क्या इद्ध, क्या को, क्या १८६६ सबके निर्ध मात्र सुद्दों है। १०३ या ११ बले निरत समय पर झातः लाल । या सब लोग करने करने गिरिजारों में जाते हुए दिसाई देते हैं। बहाँ ईश्वराराधना के बाद घर लीट कर वे मेलिन नरते हैं। क्या कुछ देर काराम करके सैर को निकलते हैं।

शिकामा बहुबबहु। शहर है। संसार के बढ़े पट्टे शहरों में सबका टांसरा नैवर है। यहां एक "मुन्दर स्नृत्यम" कर्याद सजादबपर है। यह मिशियन स्मेल के किनारे शिकामो विश्व-विदालप से बोड़ी ही दूर पर है। खेबबार की मचेर नो बज़े से शाम के पाँच बले तक, सबको यहां हुद्ध सेर करने की काला है। इसलिये इस दिन यहां बड़ा मोड़ रहतों है। काट नो वरक के सालक-सानिकार ऐसे ही स्थानों से विद्या का कार्य करते हैं, क्योंकि यहां पर संसार की इन सब कड़्मुट बल्लुमां का संपद है हो। शिकामों के प्रसिद्ध मांसारिक नेते से इक्या की पर बाद पर बाद पर बाद पर बाद पर बाद पर हो हो। हि प्रस्ती के प्रसार की हो से हुए हो के स्थान कर बाद पर हो हो।





शिकामा का रविशास

कपर प्राशियों का जीवन प्राकृतिक नियमी के प्रकार बर्दमान धवाचा को वहुँचा है। हुँ पदार्था की भिन्न भिन्न कमरें। में दरां-परि क्रमिक-विकास धक्छा तरह वननाया गया है।

€0

.

सप से ज्ञान है। जाना है कि उत्तरीय धर्मी किस इकार भिन्न भिन्न यारा अनुधा में क बद्तते हैं। किल प्रकार प्रकार माना वर्ष के 14 भीतन देनी है। उत्तरार धर सरणनेवाने रीप्रे

भीतक बने लार उन रेश तो कण्डा तरह दिसा^{त्र है} यक्षी यक बच्च व वच वाच्यम हा भागा है। के प्राचीन जिल्लाम कर्न इराज्यनसभा की पूर्ण कैय पर अंतर करत या केल नकार किन गीरी

में बहुनल के बच्च न ती वर्ग करते हैं हैं राम कर व्यं लंड रासक जर जं प्रतक युई की A SANGE CO. LIN HILL ST. इस्तकः । १ १ १ । सामान्यसम्ब

केस कर व्याप्त के देश न राम स्वर्मा की ाकक्षारमण्डला चार्च वरस्य सम्बद्धाः वर्षे A BEAUTINE STATE OF THE STATE O

100 00 20

स का संबर्ध सारवर्ष की बलाय में यह पुरुष दर की ब्रा निकला, इसका ब्रामा ही दन सब परि-मुल कारद हुमा ।

झलायद्या में बल्म्यातिनीया, रमाव्यनीया, शंतु-नातीर दिया बाहि कि किस वियादों के सर्वेद की ते दिदसान है। "एक एक देत कात" सुद्दा का दिन ों कोशिए और कुछ सारिए सी। यादि से बैसे र्षे दहाँ के निकासियों का दिए जाते हैं। वे बालक-

र्थन के बहुति यहाँ हुन्ती दीत्रवहा प्राप्त कर लेने हैं दग में इस दाम हर रहून से दश्ते से भी नहीं

पद्मवर स दाहर तिक । कर देखिए । क्यान की दिशारे रक्षा बला १६ है। बचे रकारी हुई है। बहुई ह्या अब के रहे से बैहे हैं की हिहेशक रहे हैं। लगत 医电动性电阻性 化二酚二酚 化电影电影

Here the last the west of Color and e e e e e e e e

the second of the second

The second second second

शिकामी का गविवार ٤X चतुमार वर्दा उसे उच्यता पहुँचाई गई है थार उमकी रहा है गई है। उच्छ देशों की कई बुध वहाँ देखने में धाने हैं। इंड्री का बनस्पनि-विद्या-संबंधी बहुत-सी बारें बहुई मानुम ही जाते हैं। क्यानों के सिवा बहुत-से धीर भी स्थान लोगों से बैटने पठने, रॅमने-पेबने के लिये हैं। शिकामों बहुत वहां कर है। इससे नगर-निवासियों के बाराम सौर ग्रुड पदन है प्राप्ति को नियं, वाय बोच गनियों में "ब्लयार्डज" नार विदार-म्बल हैं। यहाँ की गलियाँ धापने देशों की जैसी मा

हैं। गलियां क्या एक बाहार हैं। प्रश्नर के सकानी के की दोनी किनारी पर, पांच फुट के क्रीप सदक से कैंचा राह लोगों के पज़ने के जिये बता हुआ है। बोध की सड़क गाड़े थे। है, मीटर आदि के जिये है। सुने सकानी और वी

मड़कों के कीनी पर भी इवा के साफ रखने झीर गर्ट मादमियों के मनीरंजन संघा लाभ के किये बीडी बीड़ों दूर विदार-वाटिकार हैं, जहाँ वैठने के लिये बेंबें रक्सी रहता काम से बक्रे हुए खो-पुत्रव राज् सार्यकाल यहाँ दिल धेते हैं, क्योंकि थीर स्थानों में गाने, बजाने थीर जल-विक भादि के लिये बोड़ा-बर्त खर्च करना पड़ना है जी बी मामदनी के लोग नहीं कर सकते। वनके लिये ऐसे स्था ष्यानी भीर अजायवधरों में इसने की स्वरंत्रता है। यत किया गया है कि सब की इस स्वतंत्र देश में चानंद प्राप्त क का सवसर मिले। यहाँ जो धन ब्यथ किया जाता है। भारीरिक भीर मानसिक दाना प्रकार की व्यति के लियं, किया जाता है।

यह ना हुई दिन यो वान, श्रव रात को सुनिए। यहाँ पहुछ ने नाटकपर, प्रदर्शनिया भाग समान हैं, जहां अपनी अपनी रूपि के समुमार लोग रात को जाते हैं। शिकामों में लोग बाक्यर रात को शिरजा म जान हैं। रात की भी बहुँ इपदेश, गायन भार हिरकाईन हाता है। यहाँ एक जगह "एहट सिटार" रपेत नगर है। यहत से लोग बहुँ जाते हैं। इस जगह को स्वेत नगर इसिन्ये कहते हैं कि यहाँ पिजली की गुप्त रोगनी होनी है, जिससे रात की भी दिन ही-सा रहता है, इसके विशाल हार पर बड़े सोटे सोटे पिजली के

प्रकाण के बचरों में "दि हाइट सिटो" लिखा हु बा है।
चिजली की मिलती यहां क्ष ही देखने की मिलती हैं।
स्थान स्थान पर प्रकाशमय र्ग-विसंगे बचर-चित्र बने हुए हैं,
को मिनट मिनट में रंग बदलते हैं। इस स्वेत नगर के भीतर
धनेक मनेर्रजक स्थान हैं। कहीं पर गाना हो रहा है, कहीं
पर यह 'हाली' में नाच हो रहा है, कहीं "सरकस" का
तमाण है। दुनिया भर के तमाण करनेवाले यहाँ बाते-जाते
हैं। गरमां के दिनों में ने, तीन ही चार मास में, हज़ारों
कपण कमा लेंगे हैं। यह स्थान एक कंपनी का है। उसके
गोकर मारी दुनिया में वभाशा करनेवालों की लाने के लिये

मृमा करते हैं। भारतवर्ध के यदि दी तीन भन्छे भन्छे पहलवान,

EE

किसी देशी केंपनी के साध, अमेरिका में बादें तो इन् रुपए क्याःकर ले जार्च। इमारे देश से सभी लागे ने कार्र

पैदा करते का उप नहीं मीगा। एक माधारतः मनुष्य गितिताना से बाकर, हिंदुला में रिज्ञादनों-हारा प्रसिद्धि प्राप्त करके नाम्या वडार कर जाता है, परेनु द्वसार स्वदसी कारीगर, पहलबान, बालेल

शिक्षामों का रविवार

मादि सभी इस कोर काने का साहस दी नहीं करते। की रिका से कुश्ती का गाँक यद रहा है। यदि इस समय के पहलवान बाडा-सा रुपया गर्ये करके इथर बादे और किं अरुधा कपनी को मारकृत कुरती हो, वालावी करेरे वारे-स्थारे हो आई। इम प्रवेत नगर में रविवार की बड़ा भारी मेना है।

है। गाडिया मा-पुरथां से नदी हुई जाती हैं। हज़ारी दर्प इक्ट्रे होने हैं। रात को द बजे से ११ या १२ बजे तह में सना रहता है। यह स्थान कंपन गरियों में खुनता है, क्यों जाडों में शीत का कारण बहुई कोई नहा माता। शीतः दो लिय नगर के बागर थीर अनक स्थान है, जहाँ सीर है

कंससार वर राज हो। क्षित्रकेशः देशदेन नत्कम् नागद्या स्वतः श्य करते हे अध्याप्त का स्थान स्थान स्थान स्थान भारत्य सार्थ्य रच अत्तर्भ व्यवस्थ पात्र^ङ

नसम्भ साल हर राजात वन द्वात सामक्षा हमार क

पाठक गायद भारता न सममें पर मार ऐसे जिनते ही मती-रिटक या ग्रिकार द रोज-समारे हैं जिनका हमारे स्वदेश-साइयों को गोक हैं ? वे कपने सदकार की, भरती लुटियों की जिस तरह दिवादे हैं ? भीर पोकर, तार सेनकर पहेरा उड़ाकर भीर क्यों के दक्षाद में दिस रह कर, दक्ष की वे कोमत ही नहीं जानते। पर्योप हुछ पर्ट-किसे लीत ऐसे हैं की इस तुराइयों से प्रयो तुर हैं, प्रांतु वे टीस कराइ की जनसंख्या में ताम में समझ के परावर भी नहीं। जहां के तिहासी सैकड़े पीछे भारत से भी कम साचर हैं उन्हें दुर्ग्यमनी से बुद्दने से भगवाद ही दयाहै। (मोर्स्ट-रिपर्यन में)

दाइ-स्तुदिक

क्रमिक—समानम्, दीवकार—देशो तमान—सर्गः देवनानं वदान—मारका, स्वद्यारार्थ—मारकारण-वस्तान्य वस्तान्य वस्तान्य (क्रमिन्सो—माराज्ये

1000

्र—दिकारी में सदरा केंमें स्ट्रीन किया हाला है।

र्-न्य राज्य राज्य राज्य सम्ह । हक्के में जर्मन

रे—कर बरा क्षेत्रहाम कोत्रहम के रूप ही उच्चेपाल जे पिरा हा रहता है।

Y—any state states his site to the first first the page and any one for

(—) The stag of any finite of the stage of

शिकारीर का रविवार ٤c

बरावर, बक्रवाद, बल्हीयर, नगर, बड़ा ! ७-- चनिम चनुष्टेद के महिल अप में लिली ।

१०---प्रथम अनुष्युष्ट को कियाएँ चुने। श्रीर उनकी यह स्थाएवा की ११---इस यात का मारग्ता निकाल कर उसे खानशी और से एवं ।

९-इस पाढ के साधार पर तुम सपने यहाँ श्रृष्टिमों के स्वतीत

द-इन राज से मध्दे बचा शिवार्थ मिलनी हैं ! की कैमी स्वयस्था कर सकते है। और हैसी की जानी चारिए

 शिकामी कादि स्थान नकते से टिम्साल ।

क्य में प्रवधित क्रेंग ।

र्राके र---

६ - नए शब्द बनावर प्रयक्त करो --

(६) काली-दमन

हम्स के हर स सिविद-इंद की,

विभोहना भी करता बनुस है। बर्रन करता उमका मुगेध हा .

वर्ते बक्तकः बहु-प्राक्ति-सम्ब है ॥१॥

विधित्र रोमें सुद्ध हैं। प्रशेष्ट में, स्वभाव रोमा उनका सपूर्व हैं।

नियानों है हिनमें निनान हा,

प्रजातुरामी दन की विद्वारता ॥२॥ महरूर होता दिलका संभवन है.

म दावय देशे हिमाई सनाह हैं।

भदोब प्यास करता सबैब है,

मार्थ से भी गुर के इमार में ॥३॥

भन्द हैमा यसपाय-रूप है. बर्वेड वारा उनको स्माम है।

विकास के किए के दिवास के

ख्या अस्या रक्षक्षेत्र इस्ति **इ**स्ता ,

म र १५ वर्गम सर

व्याक क्रा स्टेस्स्ट्राह स्ट्रा -

७० कार्सी-दमन

सुपुष्य में मिश्तित पारिजात है, मयक है ज्याम विना कर्लक की स्था

प्रवाहिता जा कमनीय धार है, कलिंदजा की भवदाय सामने।

निर्पिता में। पहले चलांव थीं, विनागकारी विच-कालिनाम में ॥६॥

जहाँ सुकोड़ा-मधि युक्त घार है, वहीं वड़ा दिम्तृत एक कुंड हैं। सदा उसी में रहता भुजंग वा,

भदा बसा म रहता भुजग था, भुजगिनी सग निए सहस्रयः ॥॥

गुहुर्गेहु श्वास समृह सर्प से, कनिदना का क्ष्मा प्रवाह सा।

करण्या का क्षताः प्रवाह कर। अपन रुकार उक्षात्र से सन्। वेर्कतः सामना-प्रत्ये का सद्धी

4 4 4 4 4 4

् ००० । इ.स्त.च्या । १००० व क्यों क्ष्री का अस्य प्राप्त सें

कर्ष्यु प्राप्ता गाँउ का रोजन मां मिहत हो। स्पाप्ता भी विषय हो। स्टब्स्ट की मी शतका पूर्वेत का , है अ

रहें के अपी किस क्षाप से करें

प्रवासना में यह समीध्युर्वेगा । परंहु केंग्रित सुबंहर में उसें सारा विकास समाम्बरणस्थात से १३१ ।

न्यजाते की देश कराव पुरेशा, विस्तिहा होते. संद्राचनात्र की त रेजार के वासि-माहान्त्रत की,

हुए सम्बद्धाः श्रीमान्त्राणी १३.

कोल्ड का अस्तर हा

७४ काली-इसन

फयाम-गीरोपरि सजती रही, सु-मृति शामार्माय को १ केंद्र की। विकीर्य-कारी कल-स्थाति यह पे, भवाय-स्फुल्ल-मुखारविंद बा॥

विवित्र यो शोश-किरीट की प्रमा, कमी १ई वी कॉट में मुकाहती। दुकुत में रोर्गमत कांत्र कंध या.

अक्षुण भ गामित काल कथ या, विजंबिता यो बन-माल प्रोप में ॥११

महोश को नाम विधित्र रीति से, ग्वहत्त में थे वर बार की जिए। मना रहे थे गुरकी सुर्युद्धः,

प्रधोधनी, मुत्यकरी, विमोदिनी ॥रेग् समल सर्पो सँग श्याम ज्यों कड़े, कर्जिट की नेदिनि को सुझक से।

एड़े किनारे जितने समुख्य थे, सभी सहा शकित-भात हो बठ॥६६

सभा सहा शकित-भात हो उठ॥९९ जिलोक शानी जनता भयान्सा,

रकेद संगक विभिन्न सार्थेसे। •वर केनक संस्था समृत्र का

क्_{र वाष्ट्र का सार्वास स्टब्स}

मतर्फ-संचाजन से मु-युक्ति में हए बना-भृत समस्त सर्प थे, न भारत होते प्रतिकृत है क्या १८६ ग्रामय ग्रहरेट समीप शैल कें,

ग्रजेंद्र के चाद्भुत-नेता-नाद से,

त्रहां बड़ा कानन का काँछ के कुटुंब के साध बही प्रहीश ही,

मन्दर्भ दे के दर टाल्ट्रण 👓 🕡

न नाग काली तब से दिन्य बहु

हुई तमी से बहुनाईको हाल

ममाद लीट मव लोग स्टब 🚉

प्रमाद सार्व ४३,२५५ 🧓

मेपप्रवान सं)









नारनार, विधास—विरोता, कर्यु—(कन् मध्ये) रा दुभगा- नुरी, विधाहणा—निरा, परम्कार, धार्मारन-भानुकुमारि—यनुना, धेरिक्षी पूष्णी बर्ध्भवित—हर्र, गरम, विभोष "—भगमर, रावण्यनु ।

क्रभ्याम

र--- इन गाय में वे पांचापी चूनका बाद की। जिन्हें हैं को गाह हैं।

रे—चैं० म० ४ चीर ५ का मान्वय ज्ञथ मामका ४१ (मारो) १—धीइण्या को मुनमा यहां क्वा त्यास्य त्यासी में की गाँ है निरोप शर्फ माइस से अकट करें।

र-भीरणा में कीन कीन से नजेर धारणक गुरु ग की ' 'धार समन स

६---विकासिक का बाला पहा है। जार्थ

Tree main agrige.

一里 计电路

-भीड़प्त श्रीर प्रतना यो के प्रयोगशायक ग्रन्ट चुना, साथ ही विषयांची शहर बतासी —

उरकृत, बी।दयात्र, सुग्रथ, स्माल ।

-भिन्न भिन्न धर्म दताकर उदाहरण दी-रसाल, बाएी, बाल, घड़ी, भीत, बुल ।

-ग्राप्तश्च रूप लिलक्य प्रयुक्त करो-

मत्त, पूलार, हिकोल, दक ।

77---

-भीराप्य के सदथ में ऐसी ही ऋत्य कथादें बताना ।

(१०) सर चंद्रशेखर वेंकट रामन रसन महोद्य का जन्म ७ नर्देवर, सन प्रणा

द्रियनापम्ली में एक साधारण वंश में हुआ थी। पिवा वहीं किसी मूर्व शिचक में। श्रानं कं जन्म कं कुत्र ही, वाद बाह्देवर े . सं बाएका गरित के बार का स्थान मिर्व बा रहिशास हैतरे कीर जीविक शाम. क कारले पहित्र है

हर हो। बी व बार

में था बनुराग र^{हा}रे बारगाबनमा हा से शमन सहोत्दव की वैज्ञानिक क्रमक कड़ी : अरापने बा० ए० में भौतिक विद्यान विद्या में प्रापनी इतिहास अने की राय की बी, पारन तरहें बाजक रमन में इसकार करने । हा कहा कि नी की

नाम हो लाम '

कृत कि में तम काव बांधमान है चानी FAN 441 141 25 5 5 4 4

दो: एट का परीस्थाना विकला । रमन सर्वेगमम काप् प भौतिक लाख का 'कावा स्पर्श-पट्य' श्राम किया । रवें प्रपरीत बरायने भौतिक साम्य में एमंट एट की पहारे र्धेभ की । एवं, दिन की यात है कि कादके एक सहपाठी रि योंट करवाराय की नायशास क वैक ध्याम में कुछ देह एका कीर क्रमका निराकरण करने के निये के कारने फ़ेंसर ऑस फे पास गए। परंतु थाः आग इस सगद इस देह का निरायस्य न कर सकी। भारसन सहोदय ने उस यांग का स्वरं किया कीर इस विवय पर लाई रेलं गहादंय । बनाटा की पटने के उपरांत इस प्रयाग के काले का एक बीन तराका निकाला, जी पुराने तराके से कहां घण्डा था। म नवीन तरीके की प्रश्ना स्वर्ग लाई रेखें महोदय ने की रीर वाजक रमन के पास वधाई का पत्र भेता। इस घटना सं त्सादित हो रमन ने इस विषय पर एक गर्वपदा-पूर्ण स्रोत त्रेयकर लंदन के श्विद्ध वैद्यानिक पत्र "फिलासीफिकल रंगजीन' में भंजा जिसकी उसके संपादक ने सहर्प वीकार क्या दूसर वर्ष एक धीर लेख जिसका प्रकाश-पर्कर सब द्वा लियका कित्साव प्राप्तवा से सर चंद्ररोधर बेंकट रमन

रमन सहोदय सिर्फ वैशानिक हो नहीं 🐉 धर्म संबंधा विचार मी बढ़े उचन हैं। इसका ग्रामान विरयपियालयों में दिए गए उनके भावयां में नि भापके भाषक वर्षे ही सदस और मुंदर होते हैं। रदत-महन भी विचक्कम सीधी-मादी है।

C.S.

भाप भवने सार्था पर विशेष क्रवा स्थाने हैं। ^{हार} भी भाष पर बड़ा अड़ा रत्यते हैं। सायक विन्ते हैं भिक्त भिक्त सम्मानित चन्द्रा पर स्वाधित हैं। इं मावकी एक निर्मा प्रयोगशाना है, जिसमें धाव धर्म के मात्र पारनेपथ का काम करते हैं। चाप निर्मे के बानाहरा के सदाय जी हैं। सारत में बाते वह र पीय द्वी व्यक्तियों की इस संख्या के सदस्य दीने वी RITE & a

ना रमन महाद्व की बाद करते थे।दा की है। भाषका सड़ा साथ स्, जिस्स साथ विशान की इंडी सारम का मोरन वदा सर्थे ।

(myn b)

- diament

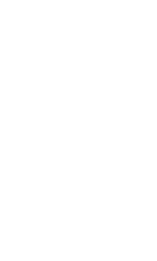
गाउँ अश्चा

her warm toping a same or and it मात्र म बारत स्थानका साथ । वारत सालकार्य ही THE ME TO SPECIAL WE AN ARREST des albudo made di a di estatul.

द्यभाम

मीर पीर रम्य का बार्य जायन मेमा था । उनमी प्रकृति ी कि शक्ति में दाना रेते 'बल नदीन का राजारी ने नाम पाना है के लोबन को प्रयान त्यान प्रकार हुई, अब वे क्या करते 🥻 🕻 पे. जीवन में क्या उपरेश 'मलना है ! भागतीय के पाय में क्या जानत ही है ने रावपी ने प्रपुष्त बरा स्त्रीर नापार्थ जिल्ली— प्रतिभा समय उठी, भैना पर विश्वाम न बरना, द्वार पहना, पद पर खारुए होना, युक्त कड से । । शब्द हैं, इसके मूल शब्द बताओं — देवर, ममानव, भीविष, झासमी, स्राप्तडी । स अस इत्यों में । युक्त करी— पैडक, ग्राप, वहा, महोदय, लाथ, उपाधि। तम पनुष्ठेद का बाक्य-दिश्लेपण करो। रमन के अपने आर्यकारों ने क्या नम्मान शास्त्र हुआ है !

द राग्य कार्य का अवार्य समस्त्राता । री प्रकार क्रत्य कार्ययनारको का हाल बताना । - जासुलोय जार्थद का परिचय देना ।





जीवन-संपाम धीर छोटे पाखी थगोची, रेनेने आदि में परियो के समान नायती और हमें कानर देनी हैं, इसी कारण दृष्ट जीवों से बबी रहती हैं। धर्मक आय किमी न किसी इकार हिंसक जीवों से

40

क्रवमी रक्षा करने में समर्थ हो अते हैं: पर इस पाठ में केवल तम की हो के वर्णन करने का व्यव किया जायगा, जा स्वी रचकर भगवा भागनय करके राष्ट्रकी की गाँख में कू भाकते भीर अपना काम धनाते हैं।

धारीक यालकों के देखने में बाया द्वारा कि क्रियन जा का की हा, किसी का दाध लगते ही, धपने शरीर को ग्रह यहां कर गालरूप यन जाता है। इसी प्रकार जिलाई सामा लान की हा, आ वरसात के कार्य में दिखाई देवा है, मर

का सकत पाते ही गुडमुडा है। निश्चल है। जासा है। इसका क्रिभिश्य क्या है ? एक ता यह कि उस रूप में शरीर है कामन भग नाथे हातर हानि से बचते हैं और इसरे यह कि इसे निरंपत देश शर्भ यद समसक्तर कि वह सर गया है

प्रमुक्ता पाठा हात्र दक्षा है। एक दालनुमा कीड़ा होता है। इसकी श्रालाको भीर भे तारीफ करने क नायक है। जब वह किसी वसे वा हाल पर के रा उस समाव क इ उँगली भर वठा है, बस बहु सुरंत सिकुड़की भीर दान का कर रारण कर कहन सफाई से नोचे शिर जाता है

तना काइ द'ल ८ क्क क्का ना अपनी पत्र विकास ती वर्ष

पास-मात का घारूय से इस धूर वा से द्विष जाता है कि उनको पता लगना प्राय: सम्मेशव हो हो जाता है। ये सीनों प्रकार के कोड़े मकारी नहीं करते तो क्या करते हैं! जात के धानसार, अपने रंग बदल कर, धास-मृत्य धादि

में दिए जानेवाले कीड़ों की बहुरुपिये कीड़े कह मकते हैं।

गिरांगर में यह शांक होतो है कि जिस स्थान में जा पैठता है दस स्थान के रंग को अज़क अपने शरीर में से धाता है। इसगे जहां धपने रंग में परिवर्णन करने की शक्ति हिन्हें में यथि महीं है, परंतु वह भी ऋतु के धनुसार भेस बदल लेता है। यरसात में जब पारा धोर हरियाली रहती है तब उसका रंग भी हरा रहता है। कार्यिक मास में यह पको पास का रंग लेने लगता है, धीर जब चैत्र, बैशास में हरियाली स्थाप धास विज्ञुन नहीं रहती तब बह बहुरुपिया महिया रंग का है। जाता है। इम पकार रंग पदतने से उसका यह फायदा होता है कि वर पपने की विना प्रयाम हिया मकता है धीर प्रवर्ग जाति कर गत्रुंग म बन मकता है। उसके पंत्र भी इस प्रकार के पंत्र से प्रवर्ग में उसके पंत्र भी इस प्रकार के पंत्र से प्रवर्ग में उसके पंत्र भी इस प्रकार के पंत्र से प्रवर्ग में उसके पंत्र भी इस प्रकार के पंत्र से प्रवर्ग में इस प्रकार के पंत्र से प्रवर्ग में इस प्रकार के पंत्र से से से से से से प्रवर्ग के पंत्र से प्रवर्ग के पंत्र से प्रवर्ग के पंत्र से प्रवर्ग के प्या के प्रवर्ग क

हाता है हुए स देखते से तो धोरता होता हो है। कममण हमें हरे रेग की एक इस्की नोयू के पेड़ क एक पन पर इन सूत्रों से बैठी हुई नज़र बाई क्रिकी क्षेत्र

रहत है साना दा हर कोवल डाल से हाल में ही ानकले दा धीर धमा तक कह लेकर फैले न हो । जब वह वर्षा-सृतु में डाल पर घेटा रहता है उस समय वसे पहचान क्षेता टहा काम



जीवन-मेगान भीर हारे प्राप्ती ्रइस्ती का स्पिन्य में इतना प्लीदा देख हमें बहुत दिस्मय पुषा पर इसके साथ यह विचार भी भाषा कि यदि वह

मीमनय में इतनी कृपत न हाती, ती इतने दिना तक सद सैंगों की बांदी। से पूज कीक कर बारना पेंट क्यों कर अरही है क्लाश करने पर शांत पुका कि बहु नारवी के पेड़ पर बैंडमेंशाली निवनी जाति की एक इस्सी भी। नार्रगा चूँकि नांद्र का ही ज्ञानि का पेह हैं इसी बारय बहु बहुई पहुँच रई : एक इसरे दिस हमें इससे भी दहकर दीर एक किए-जनक । इय देखने की मिता । एक पेंडू की एक हाल के अलक हुई भीर कुछ सुरते हुई एक दहनी-सी हुमें दिखां 🐖 ج दैन्य हमार सन से यह दन बढ़ा कि बहा दहर 🔊 ्

र्ख । इसका भट्टम अन करने के लिये होरी ही हार 🐇 🚋 को हिनामा चाहा न्यें ही एक बीड़ा धार्क 🚎 👵 यह गया । तब तक वह कीड़ा पेड़ पर देश हर यही जोत लाका रहा कि बहै बहुमी हैं, उम्मरा 📜 🏸 पेंड को डानों से मेन कादा का की। 🕬 भागता था कि वह सुदी इसकादी हुई रहन ಕಾಸವಾ ಕ್ರಾಪಾನ ನ ಕರ್ಮವಾಗಿ _{ಸಾಮಾನ್ಯ} ಇ



है। ध्यूरे देत के कई करिये दश को पाष्ट पर काम कात को प्रशास और साम गहुता व निवस्त देतकर पाम राम में पित जात है। पहा का नुस्दरी वरणे पर दृष्ट्री-क्षणान (में वाण्यात शासक) जाने से कई सुन्या मिलेंदी जो क्षणान के बाद में कादवा राग गिलाकर काहर से शाकर इस कार्य बहुते हैं।

तक सार्व की पुलाक में तक राध कर कहानी उनसी हैं। इस कर्ण वराण का बागा अप र वह इसे बाह कर बात कर पाण का बार कर इस बाह कर बात कर बात कर पाण की देशार करना का हमा नरह कारिय साम प्रकार कर कर सहस्य साम्मिणिका सा हमा पालन साम प्रकार कर प्रव कर प्रकार कर प्रकार कर प्रकार कर प्रकार कर प्रकार कर प्रकार कर

बाटरम् का युद्ध

स्याग-पत्र में उसने झपने पुत्र को ही डर राधिकारी निय या । किंतु सन्-दस ने फिर वर्षीन वंशमाँ की शी राष्ट्र

प्रथ बर्वीन ने इसका अहाज घेरना चाडा मद्दान में चला गया भीर कहने लगा कि मैं सँगरेजी भी गरब लेता हैं। श्रीवरेजों ने वसे खेकर मेंड

द्वाप में कात्रन्म बंदी कर दिया।

१२६

पाउ-सहायक

गरमृष्यक-गरम् या उन्ताय के विद्ववाता किया

यकेन, प्रातक नाग, रवदना, मय, स्तम-लमा, क्त प्रचार क्या है (साम्याने), इसी प्रचार पुतानाही, नदी, मेना, लीमानस्थ —(तीमा + श्रंत + स्प) सीमा निया, देशबाध-नायने के बना, ब्टीला-बोटवाना-तुषीया--वार्ष्य सम्ब देखी, विविद्य-पना, DEFENDS 1

ब्राज्यास

नाटाम् ६ वृद्ध वर क्या वृद्ध्य बारम् मा, सार कर है व्य पृद्ध पान क्षत्र अ प्राप्त इसमें भीगोड़ी हैं हैं THE PLAN LINE ure en auf tragen frei!

aresen iii :

1 mm 1 1 1

(—बारने के मेरेलियम मान बर बराकी हम युद्ध में तुम बद क्या बरते!

o—काले राक्टों में प्रतुष्ठ करों कौर भाराया उत्तरेंग तथा अन्न सिक

प्रपं रहाको-

्राय करता, भाषा का (न्यापार होता, दर रह जाता, हाया) चालु हाप मरे, रमामा सुरता, क्रोरेरे सुरता।

c - मेरोजियम का सारंग यहाँ तुम्हे केला (इसामाई एल्ला है ?

—मार्थित समाम क्रिया स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स

रनवदस्य पार्टारी, इत्रावस्य, क्षीवहन्त कृत्रा

करणकारकारी, उसर्पकारी १०—इस राज्य रणको कीर उसरी करन प्रकार हो रू

रिक्तामून रेकर बगायां कार देशरा क्रान्य क्षेत्रण हो जन्म ----विदेशम् रामाखां--

नैत्दर, शाहर जनेन्द्र, टरहुत, रेडांक

स्यानस्य स्युक्तेर स्य साम्या राज्य स्यो च्या प्राप्त व्यापा व्य

रंग्येत-

१ — वेदालस्य का प्या दिस्सा जेल्या क्रमा २ मा मा क्रमा इदाकरण देशा।

ا سوارد عداد فر دراده تیبت دست سه سه سه سه ا

(१५) मच्ची मित्रता

मुनान नम स मिनामां स्वा साम का एक शाम इम्मीना विदान हा गया है, उपकी शिषा के न्योकार करने हों। नवान सन्दार हा प्राचीन काम से बन देन में दर्जात हैं। गया था। विद्यालग्य के सनुवाशी जीवा के मिहाद करें। रूप की। सन्दार्शाण में । स्वृत्यक्षा का निक्षानी का से यह ना — "मार्गाक गाफ्या ((शिवाहि) का, स्थित के कार का त्यान करा, या अप्त वाहा सहनी वह देने का सम्यक क्या सहन करा कि हम प्रकार के शिवाहित्य दरमाया का नहन करा कि हम प्रकार के शिवाहित्य सम्यक करा नहन करा कि हम प्रकार के शिवाहित्य सम्यक्त करा नहन वहन ना सहन हमा, वृत्य दर्शास

किया का का मा निमान हाक कमना प्रश्न दानी भाग है।

... tak H

25.5

में एक प्रकार की भारूमुंत चंचलता और कृरता भी घी।
एतं ता वह एक साधारध लेखक का कार्य करता था किर
रहने लेखती दोह तनवार हाथ में उठाई। सिवादी बन, इस्ताः
उन्नेत करके वह मेनापित बन नया और कार्ये अफ्नांका
महादोद में एक प्राचीन समृद्ध नगर घा) निवासियां के साथ
मनर में विजयों होने के कारण उसका प्रभाव इतना स्थिक
वह गया कि वह सिराकर्ष के राजसिंहासन का धनायास
ही धविकारी बन वैठा। अब डायोनीशियम् के बन, प्रवाप धीर
वह सादि का ठिकाना ही व रहा। गाम्बानी तुलसीहास जी
ने बहु छ ठोक कहा है—

नहिँकोट इस्त उनमा उग माही। प्रमुख पाइ जाहि मद नाहीं॥

यपीय यह राजा विद्वान, विधारशील भीर चतुर धा, तथापि रमधी हुगा के भटुसार उसका स्वभाव कर और अविश्वासी रेणवा था। रस्तने अपने राध्य में एक ऐसा कारागार बनवायों या बहा से बहु कैदियों के पारस्परिक वार्वाज्ञाय की ग्राम रीवि से मुन सकता था। शता की भार से उसे इतना अविश्वाम मा कि उसने अपने अधनागार के जारा आप चीडा आई सुउदा रक्षण धार से पार वार की सार से पार की सार से पार की सार से पार की सार की सार से पार से पार से पार की सार से पार से पा





सच्ची मित्रता 111 दे दा। विविधम ने प्रार्थना की कि असे बुनान देश में इंड

शायानीशियम् का उसको बात पर शिभाम म हुना ^{होत} त्रमने समस्ता कि विशियम का प्रायनक से इयने के दिने यह एक बहाना-मार है। जब विधियम ने बादने मि! है वर को राजा कर्ममत्त उपश्चित किया थीर ईमन ने यह वर्ष स्वीकार कर हो कि बाँद नियम समय पर गिवियस न हीरेंग भा बद स्वर इसके स्वास पर पायन्ति आसीमा तर राजा है बडा आवष्य हुआ। वानी मित्रों के वास्त्रशिक स्पन्तार है परीचा सेन काणिय धीन से राजा से उनकी बान सात है भीर विविषय की दश में जाने की बाह्य दी। विविदम सिमशी द्वाप स बाहर युनाम सी पना हो। क्षेत्र रमको अनुपालका स समन पर शाला में बड़ा पी वित्र रा व्यापातमात वह तार व साथ । देखा धारे ह क ८ में क वाचा (१ करना ११म व्याचीत शादा प्रमात ・・・・・ カー しょ・カーは、伊田田田の का प्रवक्त स्थाप , अक्षाप्रसम्बद्धाः स्थाप रर र र च र २ क स_{म्ल ज}र इतन का इस र

चरनो भूमपनि का बँटवारा करना है बीर बपने इटर्नकी

से सितना सादै, भनएव उसे देश वें जाने की काझां हा ^{झाई}। िवियम ने नियन समय पर सीट चाके फॉर्सा पर बारे हैं।

प्रतिकाभी की।



१३४ अच्चो मित्रता डायानोगियम् को ब्याझा को ब्यनुसार खार्गो ने डेमन ^{डेडी} कार्यके प्राप्त करने का प्रयत्न किया दी ग्राक्ति स्^{ती दीव}

सं सत्यत गीमता-पूर्वक विधिवस बहाँ आ पहुँचा। प्रवे धानकों का मूचना दे दी कि मैं निज सप्दाय के कारा जर्क देंड भागन के लिये उपिध्यत होगाग हैं, देसन का बाद की की लिये मत करें। देसन भीर विधियम ने प्रस्थर एक दूसरे को सार्थित

दमन भाग गाययम न परस्य एक दूकर का किया। विशियम का इस बात का हुएँ वा कि वह देवन व मार्थ वपाने के नियं व्यामसय क्षियत होगाया, परंहु के को इस वान का जोक हुआ कि क्यों गिष्यम यमान क्योग्यत होगाया भीर इसे (हेमन को) मित्रवा का तरे पूर्वनया भागई आगक्षेत्र ने देने दिया। यस्य है! सक्ती कि ऐसी ही हानी हैं। तिससे विश्वसारस-सहा विद्वाद सर्थन

के चनाए मन्दाय में तेमा आसमत्याम क्यो न हेम पड़े। गर्च्य नित्र एक तुमरे की सहायवा के निये प्रास्त्र को हुद भी नहीं समभते। परंतु तमी सिवता कही हेन पी हैं। तहीं सम्या प्रमे हैं वहीं सर्वेत्र तेमा हो रहता है। मार्चे काम में भीत बाद भी तमें अनुठ उदाहरण हनेम नहीं हैं

सहारात्मम नागर के पाटका का विदेन हागा कि कर्त राज्य के शरेरा के रना के तियु टिने के सेट पर्टर्ड ने के राज्य १९०० के प्रत्येश समाध्य शर्मी प्रयोग राज्य १९०० के प्रश्लेष पाट वर्षाय

रावीनोशियस् यह चरित्र देख श्रति विस्मित हुझा । उसने ाँध्यस का प्रपराय चमा कर दिया तथा म्वयं ही उन दोनों वों का एक फ्रांर मित्र चन गया।

~ हारमगल मिश्र, एम० ए०

पाठ-सहायक

कानुवयस्क-अल्प अवस्थावाला. इसी प्रकार समवयस्य, आदि, 17-देवपोग से, ऋहोसाम्य (ऋहो! + भाग्य)-पन्य माग्य। माच-मधी।

ऋभ्यास

- रह कहानी का साराश क्या है ! सिन्न के कस्तव क्या है ! - मी॰ उत्तरीदास ने सिन्न के क्सूबर समायस में लिखे हैं. इन

इया पर उसकी वे चौराइयाँ दुँदा जो घटिन हो सर्जे ! - पहाँ सो पच उद्भुत किए गए हैं वे करों से लिए गए हैं

दनके मानायं लिखा।

४-रच पाउ की भाग कैनी है उनकी विशेषवाचे नेद्राहरण लिखा । १-इपिनिशियम् के चरित्र की देशी भलक यहाँ निलती है "

4-पर्ध में वह सदम क्या बदावर लिखी जिनसे राजा ने एक विकादी।

-प्रथम सनुन्धेद के। महेद में ।लग्देः सीर उसमें ICC हुए विधानीरस के नियम दिखलाओं। - 'मुगतने के छर्च' (कह कारक की दशा ने हैं, यहां अब राज्य

का प्रदेश किस शर्थ में दिया शया है। इस कारव की सद

विमल्पि लियो ।

- नर नर शन्द बनावर अपाध प्रश्च वरते हुए प्रयोग वरें। चेप, चन्त, स्थान, वरः, कपः।

! -- श्रेतर रतासी--- अनुचर चनवार चनवाम नदहान.

धारान, प्रदान, दान कर र का धन संकेत—

े पुरागद्ध की क्या दनका

Fie 3-- 10

(१६) बेलार का तार युगेप में विजनों का नर्वत्र वस शावित्कार शर्मा ^{हे} हैं

है। यह बात हैंना के जन्म से इब की है। इस बीत है के
मिदारी बात नहीं थीर विज्ञातों की शांत के की मर देशे
भी उदारित किए राए। विज्ञातों की शांत के की मर देशे
भी जा, गृह, दाज-उच्च धीर नगर चाहि आलेदिन की
भीर कल-कारकारों का चलना चाहि को कितने ही तेही
बाती काल किए जाते हैं। यर वेत्यवां वादी के प्रांत में जा
के सत्तान होंगे का व्यक्तिक हुआ है। यह दिन है
के सत्तान जीति का व्यक्तिक हुआ है। यह दिन है
के सत्तान जीति का व्यक्तिक प्रदास हुआ है। यह दिन है
के सत्तान जीति का व्यक्तिक प्रदास है। व्यक्तिक हिल्ले
इस आविश्वार ने शिलाच्यता को इस कर वी है। इस्हें
महों यह भी है कि जिस इस्तों से सबैन्द्रमां दिन के

चान हुमा है। विश्वाताचार्य सामिती की यह प्रशासती है।
सामिती वा पहल प्रशासता सदा के येथ सामित हैं
हाईन नाम तथा करें।
विश्वाता ने विश्वात करें।

कांन चानिश्टन हुई थी वहाँ इस नए चानिश्वार को ही हुँ



क्षिपु नरंग-माही स्थ से संयुक्त कर दिया जाता है। नश् स्वास में जो विदेशारों वाहित होती रहती हैं हैं क्

रेकार का तार

383

के ताल के रेमु से टकरानी हैं। प्रतके टकराने हैं। पैत्र हम्हें स्वीच लेवा है सीन आंकलिक आवा के हर्ष क्योतिरत कर देवा है। जो वार बायू बड़ी देश राश के कसे प्रतिकृत आया के कर से जियत लेवा है। वह कि प्रतक्ष की प्रतासकों को बात हैं।

बहुत और आरचवें को बात है। एक बार पश्च भारते में जितना समय लाता है उने के समय में अमेरिका न इंग्लैंड वा इंग्लैंड से आपात का व् पहुँच जाती है। अमेरिका या बास्ट्रनिया में किसी पिं बहुत को पटित होने के एक चंटे बाद ही दिज्ञारत के की

पारंत में उपको श्वन छए जाती है। यह मृत्य के देखें मारंत में उपको श्वन छए जाती है। यह मृत्य के देखें का ही प्रताय है। उपका प्रश्चा से ये नीरण, जह, तोहे के सम्बे शार-हेतुरूपी द्वापने हाव केवाद हुनारे ले विविद्यांतर से अध्यर ला तेते हैं।

दिनिदर्शतर से ज्वर ला देवे हैं। वेतार-द्वारा स्वद भंजने के लिए दे। बातों को खाराने बीती है। पहली तो चाकाश-स्वत के देवर-आत में बीते देता करना सीद दूसरे इस तश्मों के खायात की तह हाले विकास पैरा करने के लिये बहुत-से तए परायंत के उनते

किए जाने पर भा हेन्सी हार्डर का ब्रामिक्क एड्रॉलन अर्ज कारी रंज का ही उपयाग सर्वेत्र हाता है। असमें हो कि एक हैं। यह बाद संवश्य ही कि सब जक मून-वर्ड रिनं संस्कृत सीर जांक्यान्तां बना निया गया है। हाई स गुरु में हो क्षेत्रन कमें कुछ था बहुत सहित्तरंग दूर भेजने किरे बनाया था। क्षत्र में किसी बायर्लस रहेदान में बरवत है दें हास्तरंग १२,००० मीन तक प्रवाहित होती हैं।

े हुँ बहिमरंग १२,००० मील तक प्रवादित होतो है। रवत है। स्वान हो है, बार्ड समुद्र के बच:स्यल पर सैरने-वि तहाड़ों में भी बेतार की विजनी से देशों का हाल-पाल विनित रूप में पहुँचता है और जहार के प्रेम में छप जाता । सदेरे चाय पीने के साथ ही यात्रियों का इसे अएदार पर्ने का सीमाग्य प्राप्त हा जाता है। ब्याजकन कई जहांकी मारीमेटिक प्रेस हा गए हैं, जिसमें किसी भी सकितिक ला में भेती गई गुजर कपने आप छप जाती है। वेदार की विजली से सांकंतिक भाषा में एवर भेजकर हुन्य मानंदित भार विस्मित ता चवश्य हुचा, परंह उसकी स्तर का वर ठिकाना हो न रहा जय बसने वेतार की विजली रातचान करने की भी तैयारी की। बाब पर बैठे कोई विविद्यारी, रेल-यात्री अगवा मुसुद-यात्रा अपने स्नो-पुत्रादि पालाप का मुख शाम कर सकता है धीर इसके लिये बहुत विभी नहीं करना पडता है। साधारए गृहस्य भी भवने

भै यह दंत्र लगा सकते हैं। इसके लिय कार्ड धिरोप स्थान यदा विशेष सामग्र की बावड "कता नहा पड़तो

शहर के सकाती में लगी ह्रावननी की बना कवल

रे—श्रेकोजी -बायर सर सर सर

१४२ वैदारका तार

प्रकाश देने को ही सामध्ये नहीं रखती, राफि उसमें सांब्रहित रहती है। चेतार के साधारत विज्ञती की वशो की तरह कवि के कृत्य विज्ञती के तार-क लगे रहते हैं। वह कृत्य हों

पित्रती के तार-मं लग रहते हैं। वह गण्डे भी माधारण विज्ञती-वक्तों के कुत्यून से कुद बड़ा रहते हैं। इतना ही है कि उसके भीतर के तार-में से लाइना ही एक पीर इकड़ा लगा रहता है। इसी बक्तों के बीत सेव तिहस्तरंग प्रवाहित होकर सम्बद का बूट दूर्राहा ने हैं तिहस्तरंग प्रवाहित होकर सम्बद का बूट दूर्राहा ने हैं

ताहराया प्रवाहित होकर राज्य जा हुए हैं देती है। तार चीर धातु-पत्र के संदोग से विज्ञती की बते हैं चारचर्च रूपान्वर मानव-जाति की एक चर्चुत कीर्ड है। माराय में यहती हुई विज्ञती को चाकर्स बते हैं

भारत्य रुपान्तर सानव-भात का पक भुवु है तर हैं भाकार से बहुता हुई बिज़ली को साक्ष्य कर है माकोंनों के गाननुषी हुँ भी और सुर्वार्थ शर्दार्थ भावरयकता नहीं हाती। केवल गोलाकार रूप है है वारों का एक लकता के संभे पर खटका देने से जार्द्य

प्रवाहित हानेवाली विजली को उस विजनी की है हैं
पेदार का टेलीफोल चुंचक के सहश खींच लेता है।
सकड़ा क संशे पर लटकते हुए गोलाइति वार्त है।
कि सुकड़ा क संशे पर लटकते हुए गोलाइति वार्त है।

सकड़ा क संभे पर अटकते हुए गालाश्वा के टेलीफोन का सर्वध होना बावस्थक है। यदि वह सिंहरी बचा स संयुक्त बेतार के टेलीफोन के साथ लक्ष्यों है। में चपेट हुए कुछ तार का सम्रह करके मोटर-गाड़ी में लि र किया जाय तो सैर करते हुए भी शहर की स्वरें ति में जा नकती हैं। लंदन अयदा न्यूयार्क के यहें वहें ेंगेंग जिनकी दोक सदैव बारों तरफ़ से आवी रहती मिने भोटर में यह यंत्र लगता लेंते हैं।

कंगन्द्रास गृदर के यंत्र में एक और महापकार सिद्ध है। सनुशके किनारे से मास-पास के जहाज़ों को इस के द्वारा प्रधार समय भेजा जाता है कार दरनुसार इनकी को तेक कर जी जाती हैं। जहाज़ों का तुकान मादि की दिला हमी यंत्र के द्वारा है दा जाती हैं।

(दिला है) —हहांसद

पाट-सरायक

स्व तत-प्रस्म इट्ट्रभावना इट् - म्याना-इट्संड, इरव, रमप, नाविक-(नीजीक्ट के) मत्तार, विद्यारी- स्वर्टी वे विकास, कोट-नेट्टा ब्युलिय-प्यत्यारी, इट्ट्रामन टे-इस ब्युलेशने, स्वाप्टत-दिए ट्रुक्टा।

द्यस्यास

नीत के तर में क्या वायर्ष है। इसर आयापना व बीन है। पाने क्या लाभ करता के हुआ है इसर नायेण बारे हिए है। नीत के तर का यह देश होता है और बार पार पहले साथे भी यादी कहीं है।

- नोर्रेज र परंच में दर क्या कर कर क



(६७) एहसीनराम

🗧 क्षणमूर्वन्यस्य

हैं। भूति प्रश्चित् विष्ट व सीवी सीहा है होते प्रमानक सहिते हुए गई समेर सार्ध मिलाला साँहें करते हैं, प्राप्त अवकास **महिस्सार** । कार्रिया यह अंक है, परिष्ठ स्थत करीर ॥भा Triff on picky or, who wife wiedn रिकृति पाइत इत्या, वर्ष से पाल देत ॥दे॥ काम, काय, भद्द, गांचा की ली का में द्यान । हैं भी पेड्युक्त्य एक स्वार छ। हैरान हरवन्त्रकार कहा साथ एका पूर्व की कुल्सा साधा हरूना व ८ - -भुन्तः अस्तरः व सः . . . स्हिता साथ कुल्लाक करणा । सम्भा एकामन क्ष taus surger of o





दोहा नं १ १, ६, ११, ११ । ३ - दीवा नं ० ३, ५, ९ का सान्वय भाषार्थ स्पनार्थ - ई बगाधा इतमें काम्य नंबंधी तथा विदेशमा है !

र – हाइ शब्द बनाचां---

नान, वरोहरा, रुषांचु, हिय, बीर्शन ह

५ - वया थापर है, मेहदादरण राज करी --

चोषु, चोष, चोषा, नमान, सामान, नमान, ल⁴न, विन्^{रेष्ट, हिर्न} ६--वर्ग आप हुए उनु शब्द भुना और उनने श्वन स है।

द्यस्य प्रवृत्तः इति ।

*-- वर्षायताओं शस्त्र 'लावेप---

नीर, पाइन, केश्चिमा, नैतन, धाराच I €—िंगत भस छातां में बदल करा—

धीर, गाँउ, शील, कल । ९००-निम्न गन्न शुरूद अपनार्गिष्ट मगावर बराग्री ग्रीट क्ष्ये

智可 有質性 銀行一

शहल, तुल, जुल, दम, समान ।

रे•--सड़ी बाजा में कवान रन करने वद्ध्यायया वर्धे न ध्यदन, कार्य, जा लो आय, सांख, सेवत, बंग्य, हरी रेर--बीन क्षेत्र सं डाइ गुरहे बहुए समझ है, सीर स्पी

454

40, 29 821 8543

२---शिव-यरात

-तो मैंवारन सकल सुर, बाद्दन विविध विमान। द्याः मगुन मङ्गल सुभग, कराः द्यप्तरा गान ॥

-सिक्टि संभगन करिं सिंगारा।

जटा-मुक्तुट प्रहि-मीर सँवारा॥ इंटल-फंकन पहिरं स्थाला।

सन विभृति पट कोहरि छाला॥

समि लुलाट, सुंदर सिर गंगा। नयन तीन, अपवीत-भुजंगा॥

गरत कंठ, उर नर-सिर-माला। श्रसिव येप सिवधाम कुपाला ॥

फर हिस्ल कार्याचार विशाला।

चले थिसम चढ़ि बाजिहिं बाजा॥ देखि सिवहिं सुर-तिय मुसुदार्ही ।

षर-सायफ दुलहिन जग नाहीं॥

पिप्छ, यिरंचि भादि सुरदाता। चढ़ि चढ़ि बाहन चले बराहा॥

सुर-मभात्र सब भौति शनूषा ।

निः वराष दूलह-धनुरूपा।। . देशें — पिन्तु कहा ग्रम विर्हमि तव, धानि सकन दिसिराज ।

विज्ञा विज्ञा होई चलह सब जिल्लान संदित समाजा

तुनसी-रचना 140 पी८---यर ग्रानुहारि वरात न माई। इसी करैद्दह पर-पुर आर्गी विण्णु-यथन सुनि मुर मुमुकाने। निज निज सेन-महित विनगाने ह मन दी मन मदेस मुसुकाहीं। इरिकेट्यंग यचन निंडाई। क्रति प्रिय बचन सुनत प्रिय करें। शुंगद्दि प्रेरि सकल गन टेंगे॥ ' सिव-चतुमामन सुनि सव घाए। ः प्राप्त स्वयं भाषः। प्रमुन्पद्-जनका सीस विन्द्र तार्॥ नाना श्रष्टन नाना येगा। विरुसे सिव-ममात्र नित्र देगा॥" ्रानुत्व काहूं। , यितु पदन्कर कीड बर्-पर-वार्डा। न कोड सम्मर्क कोड सथ-हीन वियुत्तस्य काह । विपुत्र नयन कोड नयन-विद्वीना । रिष्ट-पुष्ट कोड धारि दन सीना र्धंद-नत स्थान की उ कवि योग पावन की इ क्रपादन गाँउ ई मूचन कराज कपाल कर सब सद्य सीनित व^{4 =} यर स्वान-मुचर-सृगाञ्च-दुल गन वेष धर्गान्त हो है पट्ट जिनिम व-पिमाच जागि-जमात वरनत ती है

मार- नाचरि गावि गीत, परम तर्गा भूत मध। देखक क्षति विपरीत, बोलर्डि चयन विचित्र विराह

जनसी अस्ट्रा री:--श्रम हत्तर हत दर्श दराहा ।

eine feierenft er mein ही हिमायन बयेह विहास

भी। दिविष्य सीते लाई करासी । मेच सम्बद्ध ह**ैं** जिसे जस माही ! न्युनिकाल की दानि निगरी ।।

रत. मारा सद नहीं, तनवा। दिनतिति सद की नेवदि पहाबा॥ रूप्याः हिरानहःशार्वः

महित समात माह वर नारी ।। स्ट सकत हिमासकतेहर । रावति भेरक सहित-मनेदा ।

न्यन्ते हिति यह यह सैदसार वया होत हो है सद प्रतः इस्नोमा **प**वनीकि सुहाई

सर्वे रह धराच कर्ना रेच्या मानि विदेशका सिवुत्य ६३४ के ३१ के न सर्

बेस, बार, कूप नहर प्रथम १००० १००० १० रील विक्रम संस्थादस्य है। १००० वर्ग - कराता वह धवनते साथ १८ ००% विदेशी संबंधि हुमा करता कर कर

2-11

तुज्ञसी-स्थना 885 ची --- नगर निकट दरात सुनि काई। पुर खरमर सीमा प्रविनारं॥ करि बनाव सव बाइन नाना। चले क्षेत्र सादर सगवाना।: दिय दृरवे सुर-सेन निद्वारी। इरिष्टि देखि कवि वय सुमाये॥ मिय-समाज जब देखन सामे। विटरि यसे बाइन सब भागे॥ थरि धारल तह रहे सवाने। बालुक सब से जीव प्राने॥ गए भवन पूछदि पितु-माता। कहरि बचन भय-केपित गाडा॥ कदिय कहा कठि जाइ स दावा । जम कर भारि किथाँ वरिश्राता !! बर बैशाह बस्ट धानवारा। सारा हो ध्यात्र-सपात्रविभृष्य दौर--दन द्वार ब्याज-कवाज भूपन नगन प्रतिहर्द प्रवे मेंग मृत-प्रेत-पिमाच-त्रांगिति विकट पुन रहते मा जियत रहिति बरात देखत पुन्य वह तेरि^{हा} देखिहि सा बमा-दिवाह घर घर बाद अम करिडन

—मह्मि महेस-समाज सव, जंननि-जनक सुसुकाहि । बान बुक्ताए विविध विधि, निहर हाहु हर नहिं।। The series च्य है)

पाट-महायक

निवीत-वतेक, क्रांस्व-प्रमाणकारी, सिंद शाम- मार विशेष-क्रमा चारा-व्यवः कन्यारी-व्यवन क्रिक-प्तिन-स्वत्, जिन्द-प्रचार, त्वरी-केट

2004.F

नीय ती बा हैसा बूंग्य वर्ष कर करते हुए के का है कीर द्वार में क्या निरोध है है

ितारी बरात के बंदर कर है। इस कर की पार कर क

करा रहाको ।

-निर्मेशनार में जात जुंबने क बार है क्षार बना है

रत रहा हुई है की ह

र-रिंद्र में बंद काड़ नहां। यह है एक कारण ह क्या विचा १

होतीं है के हमान करे

-रिमायम के नार का रूप वहा - वहा सिंगाहते हे उन्हें है कर है है जा है

उदाराच् हो।

二明神事主和李明一 the first the second

तुनुसी-स्वना 828 - मेमी वियाप है- स्याप्या कर इनके रूप लिलो-माग्रान्त वर्गमान, विधि सीर पूर्वन्त -नंत्रगण, पराने, करेहह, देलिहि ।

 इसी नजाएँ हैं निशेषनाएँ जिस्सी—हनने विशेषण बनाउँ व्यवेत्ता संशे --बनाय, जिपुनार्थ, वरात, समात्र (

>>--ाक्सी बरात वा तुम मी सदर वर्णन करो और दिशे ! में द्वाने के किये मेगी।

⊁२—प्र₄न•२ के लडी योजी से खन्दिन करी।

संकेत-

>---ध्याय क्या है इलका परिचय देना ।

इन क'वना के नमनाकर रन का ज्ञान कराना ।

(१=) मेंसका में विद्यापत

يشد في نياش فيدة فتدي مفتدة قد دف فتعها

हरूपान के ना उत्तर हैं। इस्त्रीवर इसे सर्व के बेहरी से Fred & the same of the mathew their रेके नकार के सारणां के बारप्यक हा उसकिए भी है के ब्लूट बाद के बाद के बाद बाद मान्य है। दक्षा के से में है है है है है है है है के बार की बाराया करता कारता का कारत है हो है , हिस्से कार में कहा है - नहीं grand and my with the man we have been an after man my man. يني رأدي ويتستي شتاهه و عامله عاليا شاءاء عا فيريه معقد أأمه تسخير عبان يخشر إ नवार को समा बाह को क्षीत के बहुबा दुन عد ودد وعاضا عدوده وديد درياد المع केंद्र उसे हरता करोड़ है के हर अ है के अपन the same of the same of मेर्डिस क्रिक्ट ह मण गैंस कात्रक ह होते के बाह पहन 南京都 聖皇帝 新花。

संभाषण में भिष्टाधार ₹4.€

इनर दने से 'हां या 'नहीं' के नियंक्षेत्र सिर दिना श्रम र ता है। बसके नश्त विश्व विश्व था 'ती नहीं कर्में। **व**डी आदश्यकता है। बातधीत इस प्रकार हक देह बहुर

तीय कि जिसम 'जाना' की चननाइड साजूत वहते हो। बानचीत करने शशय इन त्राम का व्यान शता वी कि बाजतेवाला बहुत देर सक स्वतनी शी बात न हेरात निन्दर्भ गुमरो को बालमें का प्रथमन दी न किने ^{हैं।}

बीजनेवाले की बक्त-बक्त में कथ सार्थ। बाववीर है मेदाक में अप में होती कादिए, जिससे आता ग्रीर 41

द्वानी का कानुवात सेमापात में बना वहै। माध्य बानीलाच में द्वार जात का स्वान रहता है

वि किनो के भी की कुम्यानेशकी कीई बान सकेते. संशोषक की, करी तक ही संभी, वशक, वार्ती, इवाराध बीप कालीलमा से मुक्त स्थाना चाड्डिं) ह

की बार्शनमन्त्र में क्षेत्र किसी की लिये कई रहर में बाला कारते का कालका सिद्ध करना है।

किसी साथ कर्राल्य क्र शिवास से वरिवास साम वार्ग क्षणान में अनुकता न उक्त की माथ दीन कर है बाबश्यक्ता सङ्गोतिका की साधि वंदर, वंदाद^{ही, द} क रता काल विस्तास स्टब्स्स सम्बद्धाः

कारण राष्ट्रकर पर सहस्रकत सामून गाँ। क्ष प्रमुक्ता प्रमान के हुन के स्वयं प्रमुक्त स्वर्ग स्वर्ग स

मा दे हैं। ही बंदि ऐसी माने बहे कि वंह अतंर देना कृति है है। स्वरंद की नेम्रोलावृद्धेस कृति वार क्यारी माहिता शहर ।

रिंड्रों हे महिनेद्र सा की बंदा में भवे हर ही रहाना ेरा साथ ही बार्ड-पोर्ड को हम मी ऐसी म है। कि भीता कि बहुत हो मानेद शांसा है, परंसु सहैव हैंगी-देहा ही के हैरे शिक्ष चौर शीवां होती के नियं हाति-कार है।

हेर सह में दूरमा सीह क्षत्र का ! द्वार की बेड़ी सावधानी ने किरा होता, क्षेत्रीकि क्ष्ममें बहुचा बाई का आार्च ही जाते अस संक्ष्य है। यदि बांदांत्राय करते समर करियां के केरे कीह करें कीर करावतों का उनवेश किया साथ दी कि वास्त्वान में सदस्वा और वामारिक्सा का वासी है।

कित कित महकी हुरी होती है। यह की दी-बार मजान इन्हें हैं। जिसी विश्व पर विरेट कर रहे हैं। दी अवाहक शाले बीच में लाता अववा मारे क्टे सुनना महिल्डसा है। देसे शहमर पर मोर्ग के

व राहर हिता हुछ ६ हो ही बात-धात करने त्याता भी रेपर । क्यों क्यों क्यों क्यों समुद्र की बुदबाद हेराहर में रेसमें हुआ कहते का बायह करते हैं। ऐसी करत्या में " रहुत्व का कर्मना है कि बहु कोई नहें। एक बाद बा भर बेर्कर बल्को इस्तान्तृहिं करे।

संभाषम् में शिष्टामार

?75

कियों की समित्र वार्ट मुनकर उसकी हो में हो मिनाना ना नापद्रमी, सीह स्वाय-संगत वार्ते सुनकर प्रनप्त संग्र करना दूरायद है। लागा की इन दानों से बचना कहिए। पर्याप वानीजाय में तुसर की सन का समर्थन करने बर्ग

उसकी प्रशंमा से दा-वार शब्द कहने में वापवृत्ती का 👼 मामाम रहता है, तवापि, इतनी 'वापनुमी' में विना संस वद सीरम भीर संविष मी हो जाता है।

नारम और प्रतिय भी हा जाता है। इसी प्रकार अपने ही सब का समयन करने थेर र्ष क सन का लंडन करने म भी कुछ न कुछ दुराम? अंगाले

है, ना भा उनना दुराबह सध्य और गिचित समात में ईंग्ली रे। किसी अनुपरिवन सधन की सकारय निंदा शर्म रिएन्टना क निवड है और परनिद्य की समय स्था हिं^{न्}

ा हाद भ व्या है। विद्वानी के समाज से सत-सेद होने के चर्ने क् कारस प्रारम्भ है - कार्य द्वाग बहुश सनादर की हरि से देग्यों हैं।

दाने हैं। इस्तिने अपविसी की सन्न के संहत करने का कर^{ान} कार्व नव बर्ट हो नवतापूर्व ह अमान्यायेना अन्ये ध्रापे हरे मेहन बरना चाहिए। संहन सा गुनी चनुराई में दिया हैं रिक्ष विरोध संवरणन के बूद्दान नारे। बान-कीन में ब्रोप के की का राचना चाहिए बीट बॉट्स्ट्रन हो। सर्वे देर दम^{ाही} मीन दा बारम्य बारमा अधिव है। बाइमा बा दला वर्षण में है

रिक्त मान बा राज्य सं स्थानित जनते । असन्ति निवृत्ति कर बार मंचन के पर मन्न करने का परामारी दहा है



(१६) लच्यक

युवा पुरुषों को चाहिए कि ससार-वेड में प्रदेश की के पहले के भ्रमने कित में सोचें कि हमार जीवन का की क्या है? इस क्या हुआ चाहते हैं और उसके तिये स्था पास क्या क्या मार्माक्षा उकतु हैं दे यहा जिस स्वार्ट में मंजीवन-युद्ध के जिये हम भागे चढ़ते हैं उसके दिवे स्था कही कर सुमाजित हैं।

सैनिकों को यह रोति है कि युढ में आने के वहते हैं के स्वरं के निवशों का अन्तों भोति सीव्य लेवे हैं, धीर भी में युढ करने आने हैं रंथी हो रंथी अनके साइय, तेन की रिवर्ण मी हिंदा हातों आता है। है जो हात में देने वि हा जा उत्ता है। है जो हात है जिस कि उन्हें ता कुलों से हारने की विचेत के निव क

में प्रकार नाथीं को कापशी परीक्ष्ण करके कापसे शीकन केवण को स्मिर कर होना जिपन हैं। ज्यान करें कि जिस तैय को हुम स्पर्ध कहा वहां कैया नाम बहा को नमीति किये जीवन का स्पर्ध सक्या धीर कैया नाहीं हैं, वह कदावि मुख्येंद्र कीर काम नाहीं हो सक्या। जिर स्कार के स्मिर के तहें पर उसकी कीर कारों बहुमें के सिन्ने करावर वस्त कि गाहिए कीर त्या सक कहा सक्य प्राप्त ना हो जार नव कि गाहिए कीर त्या सक कहा सक्य प्राप्त ना हो जार नव

नेते महुल के लिये जिसते संसार-केन से प्रवेश नहीं किया माने बोबन भर की निर्य एक लक्य की स्थिर कर लेना महाम्मी बान नहीं है, किंश् यह लच्च इनने काम का है कित है हिना समार-चेन्न में प्रवेश करने पर मनुष्य पर पर विश्म भीत मुल्य भागता है । सैकड़ों सतुस्य ध्ययने जीवन के में कोई भी सच्च रियर न करके, जी बन्हें सामने दियाई हा है हमां की लेकर, संसार-देश में प्रदेश करने हैं। कुछ में के पार्ट घट पार्ट कर मार्ट करना नहीं लगना तब भर है और कर किसी दूसरे पर चलते लगते हैं, बोड़े दिनों के है उसे भी विकट पछ साल कर तीसरे पर चल निकलते हैं। में ही वे बार बार बापने जीवन के लुक्य की बदलने पले है भीर लाग के यदले हानि हो उठाते हैं। मिदान इसी े को भट्टता-वदलों में अनके जीवन का समसे भट्टा 'य-- मुंशवरबा --भी बात जाता है। इंत में जब बे देगते

नाज सभा नष्ट हो गण, वह घट वे घवरा कर कियो द हैं के विश्व पन जाने हैं चीर जहरे वक पन पड़ाई देश की है। किये कुछ के वह पन पड़ाई देश की है। किये कुछ की वह पड़ेवन पहुँचने पट वह बुशाश में की है चीर द कियो जाये के करने में स्थाप हो जाने हैं। इसी लिय पूंडकाल लेंगा चेवल ने निजयों करने हैं की साम कर के लिया कर है। की साम कर कर कर के स्थाप कर है। की साम कर के साम कर है। की साम कर है। की साम कर है। साम कर के साम कर स

मी ठीक बसी प्रकार करते हैं, और बस्तुओं के शुब्दार्थ विवार न कर बनकी बाहरी जसकन्तमक ही वर हुन्दी

स्त्र इय

र्ट कि इसी अनट-केर में मेरी सुवावश्या की बन, माइन की

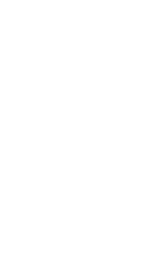
१६६

सुमा जान हैं। इमिनय पहल जावन के तिमी एक वर्ष लिका किए विना ही उस पक्ष म व्यक्त में वह वह बाँगी सैन्याना होती है क्योंकि नम सनुत्वी के जीवन का गाँधी समूच्य समय कवन व्यक्ति की पोश में जाना है की हैं सारा मेंद जीवन परमाच्या हो कार्त बानता है। वें विवाद स क्रान्तियों से बाग कहा है— 'जा सनुष्य कार्त कार्यों का अर्थों भीति से बार्ति में सार्थ हैं नियान है कि वे दर्स उन्नम गीति से बार्ति के सार्थ हैं नियान है कि वे दर्स उन्नम गीति से बार्ति का

बाम का कार सम म कर भेरा है।" बल, म बन ब बम में होत्त्रक ही मार्ग बहु हासी।

₹€\$

कों के महत्वा प्रमाधित हो थे हैं। फिलमें हो हो म विधा, किनाहरू भीर बल के रहते भा मौभारकारमां का टीट में 🍍 हो, स्ट्रॉक संसारी जीवन कैसे आर्थ्य करना होता है रिन्तिवारो । सपर्वे 'प्रायः भारते कामी का स्मार्थन पुरस् हीं के हैं किसी काम को एक बार बार्ट्स करके बीर कुछ 🎮 क स्तुनात से उसी में स्वी क्ट्राने से मन बाप ही उसी की में हैं, के कार है और को की इस कार्य की श्रीय होती की हैं तो ही तो पिर का भा भानद प्राप्त होता जाता है। किने कार्य के सारंग ही को देखकर उस काम के करने-में हैं होते की चमत्कारी कीर सहन-शोनता विदित हा कि है। हैरी वह इस लोग किसी हवेली को बाद । पाइवे ल हो महत्य रमको पहली हैट स्वाइता है उसी की उस कि का थान मनुका मानते हैं, क्योंकि पहली है के जागड़ने रहा भीर हैंदों का बसाब लेल सह न ता ताता है राहेंदे होटे कामी से बारंभ करत करते पड़े २२ क'म में हो बाते हैं, किंदू पहले ही बाद कार बन्ता सामाय क दिने केंद्रे मिलार पर बटाने का ब्रह्मण कर का प्रकार है कि हिंहें के वत निरंगा, बीर स्मर्ग ५० कर्न में हरी है रे हैती। दिना मीचे की माल्ये पर चट्टे कपर हाल में की की वह सकता प्रत्य ऐसा के ी पहले डोट घोट कामा के दिना किए एक रहें हाने के करने में समर्थ है। ह





1€= लच्य

कार्य-मात्र हो उपम है, परंह यदि समका करनेतान साधु चीर सुचरित हो थे। कोई काम मो नीच या प्रपमाने देमेशासा नहीं हो सकता। किंत् वह यदि श्रमाध वा कुर्वाद

हो तो चाहे कैसे ही मने काम का क्यों न आरंग करें, दु^{रंह}ें ही दम काम का कर्लकित करके आप भी अपमानित भीर

लक्षित्रव हो जाता है। यहां कारख है कि मामान्य कार्नी हैं। भी वहीं की वड़ाई थीर वड़े कार्से से भी तीवों की मी^{रता} sकट दो जाती है, क्योंकि निज चरित्र से दी गतुरुव सपर्वे किए हुए कामें। को बनाता, वा विगाइता है।

प्रस्वी में सभी क्षेत्र बड़े हुआ बाइने हैं, किंट बैने बड़े कर्म कोई विरले ही करते हैं। यस इसो से वे सब उत्तर नहीं हो सकते। कतएव, माई! यदि तुम दलत हुआ चाहते हो तो समार-चेः के द्वार पर सब्दे होकर विभारा कि तुरहारा विश

किम भीर मुक्ता है। यस उसा के चतुमार अपना एक लक्ष रियर करके लगानार काम करने रण । विश्वाम, धेर्य धीर भपनी सारी शक्ति से उस काम क करने का यह करी फिर ना नुरुष्टें बाप हो बस के वे का उन्नति का देशकर <mark>सर्</mark>व रच केरिया, सूस्र सुक्षी हाराबीट कर उस्य काम का विना

किए कदापि भूषणाय न थेट सकार च • मेर लाग मृत्ह चहकावसाक स्थाउमा कार्य के साम्य सही हो। किंगु हुम उनक कहते पर काम न उक्तर अपन सिक्षांत है

a suren fil

''वानी स्वभान की भट की। पहेश की क्षण्यामा नहीं, वेशींक ऐसा करते की दुश हार बीत जनत-क्षत्व केरते । ऐसी करोरि दिश्या की, क्योंकि जा स्वृत्य क्शलाश के अपन करके प्रक्रित का का क्षण है क्शका तीश एक को काम कात की वेरा म्यासिमार्क क्यांकि के तार से काल्क ही नीमा ताता है।''

भिष्ठ हैं, 18 श्रेर कर बन्धव कर वर्ष विकास पर पासने की विधि सामान की व्याप्त की व्याप की व्याप्त की व्याप्त की व्याप्त की व्याप्त की व्याप्त की व्याप्त क

23

हैं ? उनक ,बिज उनकी आशा श्रीर उनके कार्य सर् चन्त्र ग्रीप बह तात है भीव एसे हो स_्च्यों के भागे अर्थ मदा दाय जोड यडा स्टना है।

पाट महायक

--ছাবিভাৰ

सरम् अधारा रहत्य प्रदेखावदमा – परिवर्तन, **दे^{ली है}ं** शक्तपुरः के इसा प्रकार के जनस पुरस नेपील ऋतिष्ट-(व्यक् तर्हा - इय = स्वर । द्यारा सन

च्यास

म पात्र का भएश हैसी है ?

२--- इस बाड स आहे गल राज्य न ११ और असव समभावदाने औ शब्दमस्य या शब्द 'लग्स ।

 स्वापने शक्यों में प्रयुक्त करने आवाध स्था करें ---उद्यांत सदा शाय आहे सदा खती है। मीभाग्य शत्रमी को हाए म नहीं साते ।

शाहिश नमक कमक पर मुख्य है। सुधा जाते हैं।

भीरत-गढ़ के लिये आग बदन है। <--- इगका ग्रीपक क्या के मकता है, लेख का शर-मध्य क्या है। ५---इम पाठ का माराश दा पृष्टी में माहरूप से मिन्ता ।

o--- श्रीरन के लच्च में क्या नात्यय है। उनकी तीवन में

सीरमञ्जूना है ।

वरेपस एव स्वार्थ बनाइर प्रवृक्त करो—

प्रवेश, तेत्र, रात्रु, परीक्षा, श्रीवन ध्वराना । ९---प्रथम अनुच्छेद की स्वास्था श्रीर वाक्यांववह करें।





जापान को शिक्ता-प्राप्ताली

के हैं। के बिन्न बिन्न भागों के लोग पढ़ने के लिये जाते निरंहत कुछ प्रचार सन्य विषयी का भी था जैसे क्षे माहित्य, गणित, बैधक चादि चीर कुछ दिनों में डच-में हैं होरा पारचात्य विद्या की भी चर्चा हाने लगी थी।

भर दिश्कुर सत्य महीं है कि प्रथान ही दर्ग से रहें हें में पारनास्य विचार्य सोचने समें हैं। इससे पहले ^इर होत चपनी भाषा की जा पुनक जापान देश में ले र्व रहि जापानी लोग बढ़े बाब नवा परिवास से पड़ते थे कर्ने कर्ने इनका कलकाद भी जायानी भाषा या कीनी

वर्ष करते से । मह रद्भार है। में जावान हैश से सई लाहति हुई। विभेषपता प्रविकार सकत् की दे दिया। इस घटता रिनार से मदा संदल्पर स्थापित किया गया, बार देश

विकार प्रकारित केलि लगी ह साम १८७३ ईव के लागीहरू की बहुतको लेख हा गाँ । कुरेले बहुतक प्रकृतिका । यक प्रकार के लेगा कुन्युव की श्रीत से बरावर कर दिए सम् १ स.३६ हें। से एक राजाका विकास किया में बारfinet & fud mast micen atter met mit die १ **स**ित्रकार्य कर रू गर्दे ।

इस्स दरात हा और धूर्विका का निक्या कर कि शक्तव के हशाना ह दिन्दर प्रतर्गत दर्गत की ह बार-दुष्टर की होए का विश्वकर कर र ज़बर कार, रेवारी का गांव व बीड़ वा गर्गा दर व हुए





बिजय हुँद संगद पेट जडूपी पजना पडिका बढ़ि पात्रिक्ट बढ़ि मोडू मटूगेरे। पैक उटूपी पित्रमारो चटूथी राज्याति बटूथी गड़ गब बटूगेरे। धेगक उटूपी पित्रमारो चटूथी राज्याति बटूथी गड़ गब बटूगेरे। धेगम पिमान पट्यीड बर्बा कहि 'केसव' सा कप हुँ न पड्यीरे।

रावध भीर मंगद

385

पेनन नाहि रहीं चित्र की बाहत मुद्द विवाह बहुवीर॥२॥ भुक्षेत्रत्यात छंद रावण---निकार्यो जु भैया सिधी राज जाकी।

दियो कादि के जू कहा श्रास वाकी !! लिए बानरालों, कहीं बाव वो सें!! सा कैसे लरे राम संप्राम मानों !!२२!!

लरे राम संप्राम माना ॥२२ विजय छंद

श्चेगद द्वार्थी हा साथी न पोरं न पेरं न गाँव न ठाँव को ठाँव विर्^{टे} सात न मात न पुत्र न मित्र न वित्त न तीय कहूँ सँग रैंदै

'कसय' काम का राम चिमाशन और निकास न काम दि । पन रचन धर्ना पन बार सन्क नाक स्रकेलाई नैहै ॥२३

्रता त्यात अर्थः स्टब्स् स्टब्स्य अर्थे नस्मिति ।

र्र तापाच अलाख ना पर त्रप्रच्य ऋष्टि क्योंदि । परद्राह्म तत्सान द्वावरता सां, स्कूसन तर्यय कल्दे असीकी दोहा—र द कर्यों में खेल को, हर-गिरि 'केसवदास'। सोस पढ़ायं भापने, कमल-समान सहास ॥२५॥

संदय छंद

पंगद — जैसो तुम कहत उठायाँ एक गिरिवर,

ऐसे काटि कपिन के वालक उठावहाँ ॥

काटे जो कहत सांस काटत पनेरे पाप,

मगार के रोले कहा भट-पद पावहाँ ॥
जीत्यों जो सुरसगण सापऋषि नारिही का,

सगुभह हम द्विज नाते सगुभावहाँ ॥

गही राम-पाय सुग्र पाय की वर्षा तप,

सांताजू की देह देव दुन्दुभी यजावहाँ ॥ इस

वंशस्य ह्रेंद् रायस

रपो-त्रपा विश्वति १८० राज्यो । स्रदेशक्वीया । स्रय देव सहसी ॥ सिमा सर्देदी प्रदानसार । स्था स्थानुशासूम् स्थानसाय राज्या

130 52







भारते हाई। है एक दिन या एक आदमी से काम का भारती है।

स हर्ष पुरव तक देश का देश केंचे काम, केंचे क्यात रिकेश समनाभी की भार प्रयम्भित रहा तर वे इस रिकेश पुरुष हैं। बहां के हर एक क्लिके लातीय वर्ष रिकेश पुरुष हैं। बहां के हर एक क्लिके लातीय वर्ष रिकेश में के साथ शुक्त बोध के परावर अपनी भारती रिकेश में तरी हैं। लोपोमें सीचे प्ररोज के मनुष्य किसान, हुती, रिकेश में तरी हैं। लोपोमें सीचे प्ररोज के मनुष्य किसान, हुती, रिकेश मारि भीत केंचे से चेचे को मी प्रश्वित के बिद रिकेश सामानिक सपने मिल कर केंचे तरकों की इस रिकेश प्रतिस्थाया है।

एक में एक बात की बारभ कर तमका दाया गड़ा कर रेगा, रुमरे में कमी दाये पर मार्थित कर या रह एक दरजा भैर प्रमुखा। इसी हरता दम सम सम कर पास के तपस्य ए बात जिसकर केवल दर्श्यामान परा मां पूर्णित कीर सिद्धि की बहुम्या करू बहुँच गई। या मनेक पास्य सीट विकास विकास दुन्या भर में भूम मनी है उमा तरत गुम्म किए गए से सीट द्रांचा दार्थिकाले पूर्व-पुरुष कार्या मायदान मार्थ साम्य का त्रम गिला-कीरान कीट प्रशान का पहर मारी सीटाम प्रमुखा की का सामा क्रिका दर्ग

من المام ال

(२७) वर्तमान हिंदी-साहित्य के गुए-दोप

बर्तमात साहित्य धार्यान कान्य से क्षेत्र वरस प्रमान वांगी में नित्त है, चर्चान त्रकृत अश्री के प्रचार न्यान्मीरव धीर कोर्न प्रवासी दिवद-समाधार में । ये तीनों वातें वर्तमान साहित्य के कृद हो गीरवान्त्रित्त करनी हैं । श्रीकांदकारी दिवयों के च्यार देनेशानी नवीन प्रचा का दिवद हो जाना ना एक बहुत हो वां ए-साहत्रद कार्य है । तीनों देश-दशा होगा, बेसी ही विश्वामी दमावता होरों । आधीन काल से जीवन-होड़ की तिर्वता में सोकांदकारी दिवदों की क्यार हमार करिज्ञी का सिर्वत्या में च्यान नहीं तथा, वर्धाव यह सब्द च्यान से हरना चाहिए कि चन्य वारों से उन्होंने साहित्य-गरिसा प्रश्वा के वहैना दी।

इस समय बझायक पुत्र के जराका को समन्य विशयपंत्री इन्हों दिवया साथ स्टार्टना है यदाय अजनावा के स्टोरानिक कवितन सब तक पात्र त्या पर हा यजन है इस समय साथाराज दारन पाल्या का सहाजा साथक है हैंगू

हर्मक स्टब्स् सार्वा अस्ति । त्याह क्षीत्र मध्या प्रधानुष्याचे कवित्रा का सार्वा कर्मा अस्ति । त्यास स्टब्स् हर्मिकारी प्रकार कारण करण स्टब्स् अस्ति अस्ति गता दि ण काव्य से तो मजभाषा का प्रयोग भय दिलकुत उठ
ार है भीर परा से भी उठवा हो-सा जाता है। प्राचीन समय
के वियो में भक्ति, हिंदूपन भादि पर समय समय पर ध्यान
त्या भीर इन विपर्यो पर कवितार्थे भी प्रचुरता से वनी,
गिरवया भक्ति एच पर। किर भी उस समय जातीव्या की
भाव ने भारतवर्ष भर की एक समभानेवाले विवारों की न
ने दिया और इसोलये देश-हित-सव । साहित्य का यलन
हिन्नुल न हका।

बर्दमान तथ-महिमा ने लोकांपवांगा विषयों की करही की है और दिनोदिन एस भे बनने एवं भनुवादित वे जाते हैं। इन कारयों से पाठकों का भा उतन विषयों के निने का सुभोवा हो नया है। धाजकत ले का-बाह्य से पर्यानों प्रंत-बाहुंटर में भी धन्दी एवि हुई है, जिससे भाषा-य-भंडार-भरण बहुव उत्तमवा से हो रहा है धार हुआ भी । इन बावों से विविध उपयोगी विषयों का भाषा-भण्डार वना भरा जिवना कि इससे विश्वने समय वक किसी काल में हो जा।

स्तायात्र-प्रवासि प्रिकाणों को भा समझ होते हैं है। इसस कवल तथ जातरवाला का विषय, भारत स्तायापी एवं विशेष के प्रतिक प्रियोग्निस विशेष प्रवास के प्रवास इससे किसी है कि प्रवास के प्रवास के

दोते हैं। इन लागो के कारश बहुतर लाग पुराने मशुद्ध वियार से इटने के स्थान पर और भो । वृक्षों जाने हैं। यह दाप पत्र-प्रया की तो नहीं, बश्न ब्राजकन के हमारे मानिक द्मर:पत्तन को हो प्रकट करना है। भाषा में उन्नति करने करते बाद बाण्डा कप मदल कर लिया है, परंतु फिर भो उसमें एक देश्य यह है कि सब तक इमन भाषा के जिल्लो में लोग संस्कृत-भाषा के कठिन शस्त्री का जिल्ला हो कलम् समझते हैं, धीर वेसे प्रंघों के जिल्ली का प्रयत्न नहीं करते जैसे कॅगरेज़ों के वहे-वड़े संग्रक लिप्से हैं बीर बहुत दिने। से लियने काए हैं। बाब तक गय में दर्शन, रमायम, विशाग, कारबार कादि के भ्रंथ विशेषता से बने हैं, परंतु साहित्य-मंत्रंथां अस्ये गद्य-प्रश्न बटत ही कम देग्य पहते है। गय में प्रजंकारों, इसीं, प्रथधवनियों वया घरमान्य कार्यांगी की लाकर इसे उस्कृष्ट एवं कठिन धनाने का प्रभी मूराक्याप्रायः कुछ भो प्रयस्य नहीं हवादै। बाशा दै फि इस मीर भी हमार लेखकाळ ध्यान देंगे। प्रव तक हमार लेशकों ने भाषा के गृहाकरण में से हरा-अंग का होना भी भावश्यक जान शक्या है, परतु इस बात पर सर्देष भान रस्त्रनाचाटिए कि श्रन्य भाषाश्रय किसी भाषा

की रडानहीं बनासक्या। संकृत बीर भाषासे घृत दिनी से सर्वेत भवश्य घनाध नाई, पश्तु इसकी वृद्धि भाषा-गौरक वर्द्धिश कटारि नहीं हासकती। त्रैसे सनुष्यों के त्रिये

वर्गमान हिंदी-साहित्य के गुरा-दोष

. 488

न स्वयं कर क्षेत्र है। यहाँ सातका इस सतुष्य हार का रा विष्कृत हो विस्तरा कर विद्या है। एक से यहाँ बोली दिना स्त्रस प्रदान के भूगकर का शाम गाम है। बीत हुसरे इत्यादशकुरमा होने से या गाम गाम बहाँ की बी बीर सरसार क्षेत्र हैं। जान सहा देश हो से होंदी से बुटिन हुई के जान गुरा हो है।

दान्य । १ व च ८२ पार । स्त्यारी के देशे का १ व वाद्यार (उन्दरणकारोज्या) है से हुन् १ व वो वाद्यार वाद्या मुद्दे हैं कि वे कार्या

a so the to the true from the definite

तक क प्रंथी की पुराने, समय-प्रतिकृत बीर मदेसिल सममा " है। धाजकन की पद्य-रचनाओं में शागार्जमद वरें सुप्रयं गामाब के बढ़े ही जिकट दुष्य था जाते हैं। शासारंकमय कवियों का एक शासा से दूसरों शामार्थ पर बार-घर कूदने के समान रचना करने की कहते हैं। किर्म भाव की लेकर उसे कुछ दूर तक चलाना चाहिए धीर इसके संबंधा भावों एवं उपभावां की उसके ममीप स्थान देना पाहिए, जिससे रस की पूर्व हैं। न यह कि एक भाद का कथन-गाई करके दूसरे पर कृद जाना। यदि मुर्व की किरखों का वर्णन् बठावे दे। उनकी मालाबों, संख्या-बाहुस्य, देज, नेशे के दक्ते-चौंध करने का वज, कमल खिलाना, ससार में क्याता के हास या दृद्धि से प्रतुकां का बदलना, फलों का पकाना, रसीं की इत्पन करना, संसार की जीवन-१द्धि करना आदि अनेकानेक

बर्देमान हिंदो-माहित्य के गुण-रोव

२४६

शुद्धों में से क्षत्र भी कड़े दिना हमरे भाव पर 'बट से 🏋 ष्माना साहित्य-शक्तिशीनका का श्री प्रभाव देवा । सुप्रपंध गुरा वर्णन-पूर्णता में हो द्वाता है। जिम की उडाये दसका सांगोपांग कवन करना

एक भन्दा प्रदर्शक है। यदि किसी में बहुत केंचे-केंचे। भी लाने का यज लाओ हाता केवल सम्बंध से

माना जायका । काजकल बहुधा लोग न क्षा ऊँचे लाने हैं भैं र न स्पन्य को बार ही कुछ ब्दान दें

इ.स. अस्य साचारमा का निरादर एव

प्रकारको चा विस्सार है। लेगा को भाषा-माहित्य के हें इंद जनस्र तब हुंद-चना धारंभ करनी أنسة

र्वने लेग सम्भते है कि सस्टुन-राज्य-राजनी के ें हैं हैं हैं मापा-साहित्य के पीटन करतान व बाग है। िरी यह भागे भूल है। बोर समारे जायाव/ करीत मधी े बाब्यन विया जाय सा विदित्त होगा वि उन्हाने दिनमा ेस पर पातुचे का कत चयनी नीतन्यवाचा में स्मय भीर संपष्टण-में तियाँ से आया से विचना सेट हैं।

रेगारे यहाँ प्राचान कविया न ब्याध्याच कारती में निष क्यांकी का ही बहता संयव माना था। या पा म कि देशक, कार्युक, मुदी, क्यांना अवस्थार शेवर, देश कार्य में देशका सामग्राम गाँउ मानापुराय हो गाँउ हैं वर्षे सुरम्भवन्तः हेरे अन्दर्भवन्तवृत्तः नार्थः वार्माद्यवान्द्रद्वार ते सक्त है, बात हार बार र ल प्रयोग गर ब से करिया है किए और ये नहीं र समार्थ के हो जात करते हैं। इसमें सार क्यान कर्य दिवयनका य करेंद्र राज्या कामुम्सीम् trent um the fam?

where cand ale to secure or an unit amight be per on a company of the features the होसब भाग का बार है. बहु का लक्षण का बहुए की प्रस् the either of effect that to be before the e . e ~ **

२४० यर्गमान हिंदो-माहित्य के गुण-दोष ये दानों बार्वे विलक्कत कागुद्ध हैं, ऐसा प्रकट हैं और

सभा सानने हैं, यहां नक कि उपयुक्त प्रकार के लेपके में बचनदारा यहीं कहने बीर समकते हैं। वे इसी कपनानुसार बकने भा है, परंतु बालव से उनके बावरस उनका उपयुक्त

ता विभागों में को एक में डाल देते हैं। ये व्यपने भाषको मूले हुए हैं, जोर यहाँ तक अले हुए हैं कि पराये दिपारों एवं मिद्रांता को स्थास वारते हो न केवन कहते, वरत समझते

क्तमं हैं। इस प्रभंड सानसिक राग (स्वभाव) का निराकत्य देशा हो सकता है जब सनुष्य खबने दस्के सत्त के कारवीं पर सदैद विवार स्वयंत्र और समक्तता रहे कि दन कारवीं में से इनके किनने हैं।

क्तके दिन ने हैं। यदि कांद्रि शह्माप्यर को गुलसोदास से भा बंदनर मनताने ने उसे सम्बद्धान पाहिल कि तसमें उन दानी के सुबन देख सम्बद्धान की पाहना है यह नहीं और उपने उनके समझनी से पूरा अस नो किया है या नहीं भे यदि इन दोनी हनों में

से एक का भा उत्तर नहीं है तो उसे उपयुष्य गुजाजिय झान की भाषता सन न समक कर प्राय का समकता पारिण । इसार यहाँ रूप को जार चाह हो दिना से हुमा है कत् सम् चनुष्य को कोजन रहे भार से पारे

स्तत् समा सनुसार का पानन रशामा १८६६ । १९६५ । सम्बन्धान ने पर सर्वर १९ १४६० सामित

न्त्र वर्गत थान धन्त धनव ५€ाय र

प्रतिरित्त और कुछ ज़िसते हो नहीं और जिस पंघ की वे स्वतंत्र कहते हैं. प्रायः उसमें भी भीरों से चारी श्रीर सीन -ज़ोरी निकल झावी है।

सारांश यह है कि बाजकल गय की उन्नति तो हुई है, परंटु समुचित नहीं, नाटक-विभाग अभी शीनावस्या में हैं. हाँ बढ़ता हुचा देख पड़ता हैं, पद्म की धवनति हैं और सेखकी में प्राचीन भारतीय भवता नवीन पार्चित्य प्रशानियी के भनुसरद में भ्रंथपर्वपरानुकरक का भागी दाप है।

—''!सप्रद्यः''

पाठ-सहायक

उद्मायक-(उत् + नायव । -उकाणवारी, दिनोदिन--प्रांगीदन । इसी प्रकार रातायात । कचराता -बदुता, सांगीपांग--(म-सीन + स्रत-उपयो सदर स्ट्रारण-इटन निवलता, तुक-वीता वे पर-रात बटों का लभ्य, प्रचुरता—हाधकार, ईच्यांडेय-तस्य—ईच्यां-हेंग के रूपण १९७ प्रकार 'प्रांतिसंजन्द' प्राप्ति दृष्ट रहेते । पाधना--लक्षण मानाध्य अध्ययस्यरानुब्रहरण् आवे हीवर प्रत्या की जानन बार सं*

द्धवयास

द्मारकम व लेखवा बद्धा द्वांद्दा वी दृद्धा दृश्य है ह लाह । व बर बर झाले हुने हैं को हुना हूं .

八丁,三年四日 管司公司四十四年前 四月至四年。 A P S A SECTION OF

مول در المجال المجال المال المال المال

वर्रभान हिंदो-माहित्य के गृहा-होप 285 8 भागार्थ किस्ते और स्टीमा करें-.... शालाचक्रमण, अंधररपरा, विचार-परनयता, शकि, शुरण,

भति माध्ये ।

७--- नविषद समान लिलो, और यचावरपकता सांध-विषद करी---सारोप'ग, भाषानांच-महार-भरण, । शांधनातिशिंपत, कविश्वनिरहुत्था, उत्तावत्रतमः (दर्गोदिन t = विकेशनार्थे प्रकट कर पर्यायपाओं शक्ट (मारो: →

स्थाता. अदेशिय, मेर्नाश्मी, सीमाशोरी, दिनीरिन । ९-इस पाट से माहित्य रंजना से नयथ श्लानेपाले उपयोगी निर्दात था नियम (नक्षाली ।

१०--थनमान लेग्यको और विविध के किन दोगो को बोर तकेत किय

शया है ?

ditte-

१---भारतेषु बाबू का मूच्य परिवाद देशा ।

२--श्य विशास पर प्रश्नास हालकः।

३---शहिष्याप्रति पर प्रचास बालन्त ।

(२८) सूर-सुधा

(7)

रात काल येदी ह रशई। वाही हुना प्रमु तिर्गर संघ, कांचे की सब कहु दरसाई।। रहिसे सुनै, सुक पुनि चौल, रक चले सिर दात्र धराई। सुरहास' क्यासा करनामय बार बार दहा तहि पाई॥

(₹)

मोस्तम कोन कुटल-उल-कामा।
जिल ततु दियं नाहि विसरायः ऐसा नानहरामो।।
भिर भिर उदर विषय हा घाषा वैसे सुकर घाषा।
हरि-जन लाग् हरानेबमुण्न का शामाचित करत गुलामो॥
पापा कान यहा है मेती सब पाततम मैं नामा।
पूर्ण पतित का ठार कहा है मुनिए अपित खामा॥
()

(§)

हुम मेरा शहर लोज हरा। मुम्र जन्म सब व्यवस्ताम । करना कच्चुन करो॥ व्यवसम्बद्ध वस्तरत नाहा प्रकाशन वरा वरा।

ল সাল্ডা সাম্ভন্ন**্**

248 सब प्रपत्त की पोट वॉधि कॉर अपने सीस धरी॥

दाग. सुन, घन,-मोड लिए ही सुधि वृधि, सब विसरी। 'मूर पतिन को बेरिग एघारी ऋब मरी नार मरी॥ (8)

तर्जी मन हरि-विमुखन को संग।

जिनके सँग कुशुधि उपजांत है परन अजन में भंग।। फहा होत यय पान रुराए विच नाह सजत मुजंग। कार्गाह कहा कपूर चुगाए स्थान नहाए गंग ।। रार को कहा चारगजा लेपन सरकट भूपन चींग। गज को कहा नहाए सरिता चहार धरै वर्गह करा।। पारम प्रतिन बान निः बैधत रीसी करत निर्मगः। 'सूरदास' स्थल, कारी कार्मार चड्डै न दुजी रंग॥

त्राज् हो एक एक धरि दरिही। के हमती, के तुमनी आधा अपून भगेले लरिही॥

हों तो परित सात पीडिन की परित है निम्तरिहीं। चय ही चर्चार नचन चाहत हो तुरुर विरद विनु करिती ॥ कत स्मर्थान परनांन नमावत हा पायोनांर हीरा। स् 'यान्त व जा ने बहि है जब हाम इसे बाग ।।

(3)

1 5 1

या मार्गण रूप वर्गन

हम द्यानाच बैट इस-नाग्य पागाच साचि दाने।।

र्हे हर भाज्यौ चाहत ही ऊपर दुक्यौ सचात। दुर्दै भौति दुन्द भयौ ज्योन यह कोन उपारै प्रात।। दुन्तित ही जिहि इस्तौ पारधी सर हुटै संधान। पिदाल' सर लग्यौ सचानिं जय जय कृषानिधान॥

(0)

भव ही नाट्यों बहुत गोपाल ।
हामकोध की पहिंछ पोपाल ।
हाम मोर क मृत्यु बाजन निदा मार रमाल ।
मरा मोर क मृत्यु बाजन निदा मार रमाल ।
मरम भरी मन भयी परावज बता नुस्पति पात ॥
हमना नार करि पट-मीतर नात विधि है नात ।
माया का कीट पटा बीध्या लाभ ।त.क रायी भात ॥
वर्षाट करा काल, (हरस्सार जल-य) मृत्यु सिंह काल ।
परावास की सीट पटी क्यांवरा हार वरह नहरूर ।

('-)

रेशी बद बाही गीरा । ग्रामानाम समारमानाम ही जान होन्द्रण । श्चिम श्चाम मरावन्यवादन श्चाम स्वाह श्वाम । प्रमुख स्वाह श्चाम त्या श्चाम श्वाम । प्रमुख स्वाह श्चीर शिक्ष श्चाम स्वाह स्वाह स्वाह । सुर स्वाहमारी जात करण हो जा सुर स्वाह स्वाह ।

. Le est true! I form for

(९) बहायन पेंगे त्यागी-नान ।

चारि पदास्थ इत्ये सुदार्थाई बाह गुह का सुन चार्ति। रायन के इस मानह होते सरदार्थित सर्मागार्थन। बाभोपण का लेख होते पूरव का पहुंचान। सिन्न सुरामा चित्री चलावह ग्रंति पुरानत लाति। 'सुरदामा' में कह निदुर्वाई नैनान हैं को हानि।

(20)

किनक दिन इरि-सुधिरसर्नवतु गांग । परितानुस्य में दसमा में जपने परन दसाए ॥ मेल लगाय फियो श्रींब शहर न बार्य धार्य मांग थाए । मिलक लगाय चीन राजाश पांच विषयान के तुम्य जाए ॥ बाल बार्मों में मंद जार बेरान सम्मादक है दोए । महर बार्य के कहा कान गांत उद्दर भरे परि गांग ॥

(११) कोजै इसु धारने विरत् की लाख।

सहार्यातन कर्यहें मीह आयों नेष्ठ मुखारे कात ।। साथा सबस-धाम-धानवीतना वण्या मा इर्थ पात्र हेस्स सुभव सर्वे तातन हा गह न बाय वात्र ।। स्वत्र प्रतिकृत प्रति मा स्वत्र ने पूर्व स्वार्य दहेन तात मार स्वत्र न्यान बहुन स्वार्य स्वत्र स्वार्य ।। लोते पार द्वारि 'सूर' को सहाराज अजराज। गरेन करन कहते प्रशु हुस सौं सदा गरीव-निवाज।।

(१२)

त्रेमेहि राखी नैसोहि रेहीं। जानत हो दुख-सुख-सब जन की सुख करि कहा कहीं।। कि हुँक भाजन देव कृषा करि कबहुँक भूख सहीं। कबहुँक चढ़ों हुरंग, महागज कबहुँक भार वहीं।। कमल-नयक मनस्माम मनोहर बानुषर भयी रहीं। दिर्देशसं प्रभु भगत कृषानिधि शुन्हरे चरन गहीं।।

tra (12)

जो हम अले-बुरं ती तेरं।
तुन्हें हमारो लाज बदाई बिनती सुनि प्रमु मेरे।।
तुन्हें हमारो लाज बदाई बिनती सुनि प्रमु मेरे।।
सब तिज तुव-मरनागन बायी निजकर बरन गहेरे।
तुब प्रताय-बज बरत न काह निबर भये घर घेरे।।
बीर येब सब बंक भिसारी स्वागं बहुत बनेरे।
बहुद्दारा' प्रभु तुन्हरी ह्रपा तै' वाये सुन्ह जु फनेरे।

(48)

माय जु बाद के मोहि उदारी। विकास में दिसपात पाँतत हीं पांचत नाम सुरहरी।। बड़े वतितत्वाहित पासंगृह पातीनत के ही जुदियार।। भारी नरक नाड़े मेरी सुनि जमहु देत होंडे वारी॥ स्र-सुधा

२१५

हुद्र पतित तुम वारे ओपवि अव न करी जिय गारी। 'ध्रदास' साँची तव मानै जर्च द्वीय मम निग्नारी ॥

(2%)

प्रभु हुम दोन के हुल-हरन। स्याम-स्दिर मदन-मोइन बानि समरन-मरम॥ दृरि देखि सुदान भावत याय हुत पर्यी परन। श्रदय सी बहु लच्छि दोनी बाति धपडर-डरन॥ नभे कौरव, मीत सुरपति, बने गिरितर-घरन। 'सर' प्रभु की क्रवा जापर भक्त-जल सब वरन ॥

(25)

प्रभु मेरे धीएल चिव न परी। ममदरमी प्रकुतास विद्वारी धारने पर्नाह करी॥ एक सोदा पूजा में रासन एक धर बीबक परी। मह देतर पारम नहि जानम कंपन करन गरी।। एक महिया एक नार कहाबन मैनी नोर नरी। जब मिलिकी दाउ एक बदन अब सुरस्परि नाम परी ।। एक जांव एक जन्म कहावन गुरस्थास भगरी। भाष का बार साग्द्र पर सन्तरण निष्ट्र पन जात हरी।।

पाठ-सहायक

र्ग-एकः संदी-पंदतः बच्छा हैः पोट-गडरः दारा-रोगी-नाः करमञ्ज-संगठतः स्वरि-पूतः तिसंगः त्यः रोगी-नाः राजाः विरद्ध-परः पार्राध-गण्यः स्पात-राजा-विराह्मसम्बद्धाः, दृत-स्पाः।

-

हिंदिक के यह करों, कारिक प्रधानिक हुए, है हैं देखिल के कि प्रोध द्वान की हैं अभि की हैं की मानता एट दुवरे का यह अभिकार मानता वाला हैं, की विकास अभिकार मानता वाला हैं, की विकास की कि की इसी का अभ्यापन किसी किमा पट्टा की अधिकारी पान हमार्थिक कि पान की हैं। के दिलानी हैं हैं सुद्धे हैं की वाला राह का सामग्रा हैं, पानके क्यान कर

Apple Commence of the second s

Elite to white he was

 इन पदों में तूर की मुख्य का कैसा प्रतिविद तुम्हें दिलागारें पहता है है ११---राम-भक्ति-सर्वधी तुलसीदात के बुद्ध पद जी तुन्हें गार है, सनावर समभाको ।

स्र-सुधा

₹€0

संकेत--१---भूर के कार्य की खानीचनात्मक विवेचना कर समझाना !

न्दर और तुल्ली की भक्ति-वास का बेट दिमाना ।

परिशिष्ट

^{हर} विकासार सी० एस० ब्राइ०—इन्य से० १८८०, मृ०-:१९२२

(राज्ञभार का सपना)

धार कासी-मार्श ये पही के बार प्रतिक सार्गाक धीर मैने कि रहेंक ये। बार कि । अभग में इंग्लेक्टर तथा देनस्टर्डक कैमेरी के भ्यान स्टस्स ये। बारवें। तरनार ने साथा और तीर पिर काईर की उपाधरों हो। बारवें एटों ना स्टूल एत किसा और हमें शिक्षा विभाग में स्थान हलाया। बारवें नाटवालाओं के लिये गुटका, रिव्हालाल-स्नाडक बाद बाद तुरत पुल्वके निस्सी और संपर्शत को। बादनें कई मालक दुल्ला भी तासी।

शिक्त कीर स्पर्शत को। काक्ष्म बद्द मां एक पुस्तक भी शिक्ती।

आवको भाषा उर्दु या कार ने-काक्समाम्बद (दिंग होता थी।
कावका रिकात था रिकास देशी हो हमा चारिय किसे सब सीत कायार एक समाने कीर समाने हो। निस्तुत तथा पारही के त्रीये में ग्रंदी येर बाथक टाल्स ये शांसकर सम्बन्ने थे।
वैदिश कीर बहु के। मिलाइन एक ब्यान भाषा बलामा यारेने बी

हारक शिक्ष की महीचल्यों हैं प्राध्यक्ष सम्माद्ध क्षात्र हैं। भाषा कि विश्वपृत्त कर हैते तुम्म क्षात्र । विश्व के पूर्व भाषात्र करम्माद्धी शिक्ष के विशेष । भाषात्र मुख्य के भूग गणन न करमा, बरम्न कावर काव के के कि प्राप्त कावन है



इसको क्षेत्र में क्ष्म गंकन एकाना प्रकृति में हिंदी माना के बड़े हैं हैं में तुन्दान विश्वप्रमाह कार्यों विभागी माना के क्ष्मान के तुन्दान इन्होंने एनका विभाग किया तुन्दान विकास का विन्तात हुए निवास विभागी, यह दिखी के सामकारही हैं। एकान हुएका नार्ट निवास विभागी प्रदाणि की मोजको नार्ट हुई हु

्राहरू मुख्यान हारू । पूर्व प्राप्त संस्कृत स्वति हैं। स्वतिक स्वतिक स्वतिक स्वति स्वतिक स्वति स्व

电流性 化硫化物 电影 化二氯基基丁基 化多种子 新 智徳 ない いんき Hitely あって がいけいかくきょう which the will be a track of the wind from a si-医乳乳 编集主题的复数形式 化二甲酚 经第二甲酚 网络山田 电电影电话 经汇票 鞋表主要1.30分表注意,你就想要用"什么" 吃 医毒化 के देखें। *मी ब्रिंग* के इंक के लेट के देखें के हैं के साथ के प्राप्त कर के देखें 【我们,我们我们一种人的对比。 医皮肤 电电影电影 distribution and the same of the same of water age of the water age of the control of the state of the got be tell a superior to a the state of the state of the state of the and the second of the second second e grande en en en en en elementario Carlotte Martin & Ethical Co. رواه الإنسان والمرافق المرافق ا

निषयम् ४. स्थाम बेदारी थिल, यमः १०, स्थापकापुर ---स्थापान हि शिन्माहित्य के गणनीयः

के नाज भार्व है -गं, गोना खार्ग, न, इसार्गाश्ता भोग ने, शुक्रदर्शनेवारी। नीजी जार्व को गाउल चीन स्वर्ष्ट्र पुरा है। के अप्युक्त कुल्युक्त कुल्युक्त जार्गीय के दूर्व (शंग पेस विद्रमा के साम्य इसके दुन्न तायम्था सिक्त बाने गा) गीं मा (यनता, के संस्थानों है। व अन्तवाने दुन्याने हैं। वहीं द्वा काम ने कुल्योगोंदारों जो वा हो हान जार्म है---

यः व्यवस्थितं भाव वा तमा नात वा त्रा तमा नात विवस्त । विवस्त विव

संक्रणकृष्ठ संहातात पार्ट ही नेवा प्रत्म की सीत कर स्थान कर है। तह स्थान प्रत्म के तह साम कर है। तह स्थान प्रत्म कर है। तह स्थान प्रत्म कर है। तह साम क्ष्मिता है। तह साम क्षमिता है। तह साम क्षमिता है। तह साम क्षमिता है। तह साम कर साम की साम ति तह साम कर साम की साम ति तह साम की तह साम ति तह साम

चारते को जुन्य देव लिखे जिनमें में मेंभरंपुदिनोद दे

भारत कर क्ष्म सम् (क्षार कान म मध्येपुपनार है मार दिरी-मारित का इनिदास). दिरीनस्थ, धारतपा का इनिटान साथ, न्योग्मीलन (नाटक), पूर्व भारत नाटक), धूरीवारीस (कान्य), नायान और क्ष का इनिहास ग्रादि सिसी हैं।

इनकी भाषा सरल, मुबोध, स्वच्ड, गौर मीड़ इती है। शैली रोचक, भाषामुग्न भीर ग्रायलीपूर्ण है।

पंडित रामपंद्र शुक्त -- जन्म-सष्य १९४१

(मद्रसा) .

आपका जन्म आहिबन की पूर्णिमा की कली ज़िला के प्रमोना गांव में हुद्या । इन्होंने एफ- ए- तद कालिज में रिद्या वार्ट शाल्यकाल में नरकत की भी शिका वार्द थी। सन् १९०६ में इन्होंने कानून की भी परीद्धा दी थी, पर निपक्त रहे । इस बीच वे मिहापुर मिखन स्कूल में मास्टर हो गए ये। १९०८ में ये नागरी-प्रचारिती सभा में एट्रांशस्यकार के सहकारी समादक के रूप में बुलाए गए। ग्राड नी बणं तक इन्होंने नागरी-प्रचारली संबद्धा का स्पादन क्या । श्राजकल श्राप कासी-विरशंत्रयालय में हिंदी फे सम्यापक है। साय काव और गय-लेखक दोनों है। भागक कविताएँ अन्यत भावपूरः होता है। कुटकर कवितासों के स्रतिरित्त श्चापने बुद्धचरित नामक एक महाकाव्य लिसा है। श्वापने निवंधी में बध गूड भाव भरे रहते हैं, इससे ॥ ताटल खार दुरु ह होते हैं । इन्होंने कपने ानरंथों के लिये या त' शांदास्यक ।यहच पुने हैं, वा बनोविकार तुर, दुलग्री और वायसी का माध्यक चीर परत्र पाल बनाए ये इन्होंने सखा है। इन्हों रमासाननाथा न १६दा के झालाचना होत म एक नए पुग का 68.0 + 5 B

ष-विकासमाप्-(MTT)

Biffe bereit fan fame f eine bie ber meine ft प्रकारित हैं है कि है। बहुत दिया नव हुन्हें के जान बीहर एक बा नगरन देश की जनक है का गुल्हा का देश है जब बहुबाए A Dr 1

स्थापं सन्दर्भ-

TREATED BY PERSON

हे हर करावा क्षा बारमान्त है। इन्होंने ब्राह्मीया, want with more ton a reto are & going from you क्षीर इत्या है। इन्हान क्षित्री ने नाम नहने वह पुरुष्य कार्ना ह इस बार की इनके हार। बान्ही हॉन हुई है। बान का देखारी, been er, 27 ranger arrested at the Trust & & & as the the dir something &

१५ दुर्ग प्राप्त कि.स. ४.११ ४ ५०००

made frequency

this bid is a sout some it is no but thinks from the the the the state of man is a STATE THE R. LABOR PROPERTY OF S de man de la compacta de la faction de la fa \$ my may \$ grant \$ 1 mm 2 mm 4 and in ma did to the form

पंटचंद्रमौति शुक्तः एमट एट, नव्टी०— (जापान की तत्ता-प्रशासी)

धार कारन्द्रश्यवंदीय हुई है। इस समय धार देनिन कालेज दनारक में शाइत यालन हैं। धार केंगरेली, संस्कृत धौर इदा के विद्वाल हैं। धारने कई पुल्लई लिखी हैं। दिशी की तेवा कार बहुत दिलें से बर गरे हैं। धारकी माना प्रीकृ, परिमालित चीर भावन्तं होती है।

राः दः बजाशंहर सा, एम० ए०, एस० टी---(जीवन-संप्राम श्रीर होटे पाली)

आर ग्रॅगरेड़ी भीर दियों के पहित है। इस समय धार भारतीर्यकरपविद्यालय के ट्रेनिंग कालेज में ग्रिस्टिंग है। धारने कई तुदर पुस्तके लिसी है जममें से 'शिर्ट्य-प्यति' अवलोकनीय है। धार भी दियों भेनी भीर माहित्यनेची हैं। धारकी भारत गीढ़ धीर शुद्ध होती है; धार रैली मुशचपूर्य तथा सप्ट रहती है।

पै॰ कामवाप्रसाद गुरु-जन्म-मं० १९३२

(सभाषण् में शिष्टाचार)

कार जनतपुर-निवासी कान्यमुक्त आक्षर हैं। सार सही प्रेमी के कांव चीर संगक हैं। कारनी हरी का एक बढ़ा आकरण बही प्रेमना से जिला है। धारकी स्वान्य गरस्वती चारि मानिक प्रिकाकों में प्रशासन हानों शता है आपकी भाषा परिमार्जित, प्रारंगका सी। मान हानों शता है सर्भावनी सुद्ध, सुरस्वतीयन कीर काम जी है है। एंट्रनान एक्स चित्र मोनक हो। काम जी है है। एंट्रनान एक्स

gan m egt an mar bat genette Angela bi मा पर प्रदेश या माने हत्ते प्रयोग बहु बार्ट बच्छा मान कीवारी में वा प्रस्ट क्षण व प्राप्त बात है, बन्त व्याप क्षण द्वार ('अप बाध्य संस्ताक्षकाः CAS PRESIDENT A SEE MEET PEER WHI LO E TAME OF A FRES R FOR IN PAR proc. 2. 4 carre 4. a grogere & gu 4. gar4. gar4. eren

> a el serentro e de ultare e a 1 2 g # 4 fn # # 1 748 ##

ertiel gentiem

श्राता है कि वे बंद बन्ताई के बद्याना थे। इसके पिता का ताम हर रेर का इनके व बार नुवनमानी है लाग पूर्व में मार मह के.अब वही मेंच रते. बताल वह मार कु दे बारे में चीन वह में नहीं का नावने के व बहुत हाने वक जारावार गहरते हैं। सम्बंध क्षेत्र में भागा है है की नक नहीं पहें हैं। क्षांनुत

सुरवाम -रुक्त कर कथा कवक् १६४० के बगामा मन्त धीर

[=] सारारे के बाच ब्लब्सा गाँव है बुद्धा वा वस भी हाल में बता

इनकारा है के बहुत्वर अगवान में कुम्मार में इन्हें रहान दिए भो। कुछ ने बाहर जन्माना इस समय इनहीं होन्ड भी सून शह अन्द्रभाम का गरिया चा रक्षा हरत स स्टाम स्टाम है गा है क्षेत्रम नामान्य नीष्ट्र ने देखनी वर्षे और नदा वागका भाग हत्त्र में त्र इ.में में मृत्याम "का बाब हा लय । चयते प्रमु की मीना क्षा क्षा का का विश्व के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के सार्थ काल ।डो व न्यायक वस्त्र है का खती नव, स्रवण में,

(शर गुपा)

[९] पेकर इनहीं मात्र मर गर्ड भारता होते ने प्रीत पर्यंतक इनहां पालन क्या । सीप काइने में बहु भी मर गर्ड । कुलयुर जनस

पालन बचा। ताँच कारने में बहु भी मर गई। कुलबना अमस बर इनके पिता ने इन्हें लाग दिया जर नस्हर्यागद की ने इनकी पाला विमा और इनके जब मरकार किए। इन्हों में इनका नाम प्रलगीराल स्था। इनका गहला नाम समयोजा था। केम्प्यातन बी ने पास कार्यी में इन्होंने किया प्राप्त की। कार्या चलकर इनका पेताह भी हुआ। एक राज चे चलता प्रेम के बारण प्राप्ती मर्ग के गीछे पीछे ध्यानी स्तुधल को दीई गए। इस पर इनकी सी में इन्हें फलवार जिससे इन्हें बंदाच हो गया। इन्होंने मार्द भरत का भ्रमण जिसा कीर गीडावती का सामक्तिनमान मरीखे वर्ष बनुगम प्रम्मण जिसा कीर गीडावती का सामक्तिनमान मरीखे

कैरावशसः ज्ञान्सं: १६४२, स्टन्सः १६७४

'र पए स्रोर घगद)

ये मनाह्यपुष्ठ २ प० काशांत भ नुपुत्र १४ तरे त्या निर्मा निरंश भी रामित है भाई भी रामित है तिम त्या मात्र में । गहाया वीराल में इनके एक सुप्त पर प्रक्र होत्र उनहें ६ लाख वच्य पुरस्कार में ११८ । इन्हों ने कहने में उनहोंने घोर्ता मरेश का सुरसान भी नुकाल करा दया।

सारता समला बच्च सम्हत्त्व और प्रदान था, साव भी हस्तृत के द्वारा शहत था आया र सारका हुए आध्वार भा, कामाराम्म ध्वा प्रतान के 'सार ह्याचार तथा था प्रतान हाथ क्लार धार उन्हेंद्व हे उस र स्कृत की भागव है उसले . 'क्ष' या इसले डा, याचारण स्वस्त्व में भागवहां है। सारका पर परिवृत या, और गृह है। परावर्ती मावगम्म, साम धार है। थी-ता है।